

DEPARTMENT OF HISTORY
SAMRAT PRITHVIRAJ CHAUHAN
GOVERNMENT COLLEGE, AJMER



THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर का
अभिलेखों द्वारा इतिहास

Research Guide:
Prof. DHEERAJ PURI GOSWAMI
Head of the History Department
S.P.C. Govt. College, Ajmer

Writer:
ATHAR AHMED
M.A. Pre. History
S.P.C. Govt. College, Ajmer

Co-Writers:
M.A. (Final):- RAGHURAJ SINGH, VISHESHTA YADAV, KULDEEP
M.A. (Previous):- BHEEM KUNDNANI, SAURABH MEENA
B.A. (I, II) :- KHUSHI NARAWAT, HARSHIT JAIN, HARSHIT BULA, GOURAV AMRANI

Published By:
HISTORY DEPARTMENT
S.P.C. Government College, Ajmer.

FIRST EDITION
MAY: 2023

THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर का
अभिलेखों द्वारा इतिहास

Research Guide:

Prof. DHEERAJ PURI GOSWAMI

*Head of the History Department
S.P.C. Govt. College, Ajmer*

Writer:

ATHAR AHMED

*M.A. Pre. History
S.P.C. Govt. College, Ajmer*

Co-Writers:

M.A. (Final):- RAGHURAJ SINGH, VISHESHTA YADAV, KULDEEP

M.A. (Previous):-BHEEM KUNDNANI, SAURABH MEENA

B.A. (I, II) :- KHUSHI NARAWAT, HARSHIT JAIN, HARSHIT BULA, GOURAV AMRANI

Published By:

HISTORY DEPARTMENT

S.P.C. Government College, Ajmer.

FIRST EDITION

MAY: 2023



THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर का
अभिलेखों द्वारा इतिहास

Copyright © 2023 by Department of History, S.P.C. Govt. College, Ajmer

All rights reserved.

No portion of this book may be reproduced in any form without written permission from the publisher or author, except as permitted by **The Copyright Act 1957**.

This publication is designed to provide accurate and authoritative information in regard to the subject matter covered. It is distributed with the understanding that neither the author nor the publisher is engaged in rendering legal, investment, accounting or other professional services. While the publisher and author have used their best efforts in preparing this book, they make no representations or warranties with respect to the accuracy or completeness of the contents of this book and specifically disclaim any implied warranties of merchantability or fitness for a particular purpose.

Book Cover by: **Athar Ahmed**
First Edition: **2023**

विद्या ज्योति पश्य

(The Light of Knowledge is indeed supreme.)

यह पुस्तक उन लोगों को
समर्पित है जिन्होंने
महाविद्यालय के अतीत,
वर्तमान और भविष्य को
संरक्षित करने हेतु हमें प्रेरित
किया है।

*This book is dedicated to those,
who have inspired us to preserve
the Past, Present and Future of
the college.*

इतिहासकार की कलम से



THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023



मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि राजकीय महाविद्यालय अजमेर के इतिहास विभाग के विद्यार्थियों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पुस्तक "The History of G.C.A. Through Inscriptions (1836-2023)" में महाविद्यालय का इतिहास लिखने का सराहनीय प्रयास किया गया है।

यह महाविद्यालय उत्तर भारत का सबसे पुराना महाविद्यालय है और इसलिए कुछ समय पूर्व केंद्र सरकार ने इसे हेरिटेज कॉलेज घोषित किया था। यद्यपि प्रारंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में यह एक छोटी संस्था थी परंतु समय के साथ-साथ इसका विकास हुआ। जब यह महाविद्यालय ग्रेजुएट लेवल तक आया तो प्रारंभ में इसका एफिलिएशन कलकत्ता यूनिवर्सिटी से था, तत्पश्चात् इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से रहा और फिर लंबे समय तक आगरा यूनिवर्सिटी से एफिलिएशन रहा।

1948 में आगरा यूनिवर्सिटी ने आर्ट्स के 2 विषयों में स्नातकोत्तर अध्यापन की स्वीकृति दी। अंग्रेजी व इतिहास विभाग पहले स्नातकोत्तर विभाग हैं, धीरे-धीरे अन्य विषयों में भी स्नातकोत्तर हुआ जिससे इस महाविद्यालय की गुणवत्ता और दायरा बढ़ता रहा।

मेरा इस महाविद्यालय से बहुत लंबा और विशेष सम्बंध रहा है। मेरी शुभकामनाएँ महाविद्यालय परिवार के समस्त संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों के साथ है। मैं शुभकामनाएँ देते हुए ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूँ कि आने वाले समय में महाविद्यालय का नाम देश विदेश में और अधिक ख्याति प्राप्त करे।

आपका

प्रेम नारायण माथुर

पूर्व प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय अजमेर
154/10 सिविल लाईनस अजमेर



TABLE OF CONTENTS



THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर का
अभिलेखों द्वारा इतिहास

Content	Pg.No.
FORWARD	07
ACKNOWLEDGMENT	08
PREFACE	09
PROLOGUE	10
FACULTY MEMBERS OF THE DEPARTMENT	12
RESEARCH TEAM INTRODUCTION	13
ARTICLE - 1 मैं अभिलेख बोल रहा हूँ...	14
ARTICLE - 2 <i>College Architecture</i>	15
COLLEGE ARCHITECTURE PICTURES	16
OLDEST PICTURE OF COLLEGE	17
OLDEST MAP OF COLLEGE	18
CURRENT MAP OF COLLEGE	19
TIME LINE OF MAJOR EVENTS	20
BRITISH GOVERNMENT DOCUMENT - 1836	21
ORDER - 2014	22
HERITAGE BUILDING	23
HERITAGE WELL	29
ABOUT JESSOP & CO. LTD.	30
INSCRIPTION - WATER FOUNTAIN	31
STRUCTURE - HERITAGE WATER FOUNTAIN	32
CHEMISTRY LABORATORY	37
ABOUT CHEMISTRY DEPARTMENT	38
STATUE - P. SHESHADRI : BOTANICAL GARDEN	39
CENTENARY PAVILION	40
LIBRARY	41
OLDEST PICTURE OF LIBRARY FOUNDATION STONE	42
OLDEST BOOK IN LIBRARY	43
LIBRARY VIEW	44
MAIN AUDITORIUM (MAHRANA PRATAP)	45
OLD PICTURE OF AUDITORIUM	46
GIRLS HOSTEL	47
GYMNASIUM	48
STATUE - SIR C.V. RAMAN : SCIENCE BLOCK	50
PICTURE SIR C.V. RAMAN WITH STAFF	51
STATUE MAHRANA PRATAP	52
MAIN STADIUM	54
MATERIAL CHEMISTRY RESEARCH LAB	55
COLLEGE ENTRANCE GATE - 1	56
COLLEGE ENTRANCE GATE - 2	57
COMMERCE BLOCK	59
ADMINISTRATION BUILDING (N.C.C. BLOCK)	61
U.G.C. BLOCK	62
MATHEMATICS DEPARTMENT	63
GYMNASIUM EXTERIOR CAMPUS	64
GYMNASIUM INTERIOR CAMPUS	65
MAHATMA GANDHI AUDITORIUM	66
GEOGRAPHY DEPARTMENT	67
ARTS BLOCK	68
OLD BOYS HOSTEL	69
EPILOGUE	70
PRINCIPAL'S OF THE COLLEGE	71
PRINCIPAL FROM HISTORY DEPARTMENT	72
FIRING RANGE	73
APPENDIX	74
RARE PICTURE OF PRITHVIRAJ CHAUHAN	79
PRIMARY SOURCES	80
SECONDARY SOURCES	81
RESEARCH TEAM GROUP PICTURE	82

प्राचार्य की कलम से



THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023



किसी भी ऐतिहासिक धरोहर को जानने के लिए उसके अतीत को इतिहासकार के आईने से देखना व परखना आवश्यक होता है तभी उस धरोहर की तस्वीर हमारे सामने आती है। अजमेर का पौराणिक इतिहास अपनी अनूठी गाथाओं के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं धरोहरों में सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर जो 187 वर्ष से अपने ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। इस इमारत को कब और किसने बनाया यह जिज्ञासा का विषय है।

इसी महत्वपूर्ण कार्य को हमारे महाविद्यालय के इतिहास विभाग के विद्यार्थियों ने प्रोफेसर धीरज पुरी गोस्वामी के नेतृत्व में यह कार्य संपादित किया है हमारे महाविद्यालय के इतिहास को इससे पूर्व इस रूप में कभी प्रस्तुत नहीं किया गया मुझे उम्मीद है कि यह कार्य इस महाविद्यालय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगी।

इस कार्य को संपादित करने वाले सभी गुरुजनों एवं विद्यार्थियों को मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं और आशीर्वाद।

प्रो. काइद अली खान

प्राचार्य, सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर



ACKNOWLEDGMENT

अभिलेखों के द्वारा : राजकीय महाविद्यालय का इतिहास इस विषय की समस्त सामग्री को एकत्रित करके एक पुस्तक के रूप में पेश करने में सहयोगी के रूप में अपनी भूमिका अदा करने वाले मेरे मित्र रघुराज सिंह, विशेषता यादव, कुलदीप, भीम कुंदनानी, सौरभ मीणा, खुशी नारावत, हर्षित बुला व हर्षित जैन, गौरव अमरानी, महाविद्यालय के प्राचार्य श्री काइद अली खान साहब जिन्होंने महाविद्यालय के प्रत्येक भवन में हमें पुस्तक संबंधित कार्य के लिए प्रवेश की आज्ञा प्रदान की है, भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष मेरे गुरु प्रो. मिलन यादव सर, रसायनशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष श्रीमती कल्पना अरोड़ा मैडम व इसी विभाग की प्रो. रश्मि शर्मा, प्रो. सीमा गर्ग मैडम, प्रो. अनिल दाधीच सर जिन्होंने प्राचार्य कक्ष में ऐतिहासिक दस्तावेज देखने की अनुमति प्रदान की, महाविद्यालय पुस्तकालय विकास समिति संयोजक प्रो. रेखा यादव मैडम जिन्होंने विशेष रूप से हमें महाविद्यालय की पुरानी मैगजीन को अपनी आँखों से देखने का अवसर दिया, पुस्तकालय अध्यक्ष तथा महाविद्यालय के दैनिक व नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों, अजमेर जिला अभिलेखागार के मुख्य अधिकारी श्री सुनील कुमार जोशी, राजकीय अभिलेखागार बीकानेर के अनुसंधान अधिकारी श्री हरिमोहन मीणा, केंद्रीय सार्वजनिक लोक कार्य विभाग अजमेर के श्री रमनिक रतन, हमारे माता-पिता जिन्होंने सदैव अपना आशीर्वाद हम पर बनाये रखा और मेरे गुरु तथा इस पुस्तक के निदेशक प्रो. धीरज पूरी गोस्वामी जी का तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ, जिन्होंने अपनी ज्ञान की कठोर तपस्या से इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ को सुसज्जित किया है।

-लेखक

अतहर अहमद

स्नात्कोत्तर पूर्वार्द्ध, इतिहास

सम्राट पृथ्वीराज चौहान

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर



**THE HISTORY
OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER
THROUGH
INSCRIPTIONS
1836-2023**



शोध मार्गदर्शक



प्रो. धीरज पुरी गोस्वामी

विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

पुस्तक से संबंधित

शब्द

राजकीय महाविद्यालय अजमेर उत्तर भारत के शिक्षा जगत में एक वट वृक्ष के रूप में जाना जाता है इस महाविद्यालय की नींव-1836 में रखी गई ,तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार ने अजमेर को 1818 में अपने अधीनस्थ कर लिया था और तब अंग्रेजों को यहां पर प्रशासनिक दृष्टिकोण से स्थानीय पढ़े लिखे लोगों की आवश्यकता महसूस हुई और इसी क्रम में जब 1833 का चार्टर एक्ट पारित किया गया तो भारतीयों की शिक्षा हेतु कुछ राशि निर्धारित की गई उसी कड़ी में यहां एक विद्यालय की नींव रखी गई जो बाद में महाविद्यालय में परिवर्तित हो गई ।

इतिहास विभाग ने यह दायित्व उठाया कि जब 4 मई 2023 को यह महाविद्यालय 187 साल पुराना होगा तो क्यों ना इस महाविद्यालय के निर्माण के विभिन्न घटकों का इतिहास जाना जाए और इस कड़ी में अभिलेख से बढ़िया कोई साक्ष्य नहीं हो सकते संपूर्ण महाविद्यालय में भ्रमण करने पर यहां पर 30 से अधिक अभिलेख प्राप्त हुए जो अपने आप में एक कीर्तिमान हैं और यह दर्शाते हैं कि इस महाविद्यालय ने कितनी पीढ़ियों को शिक्षा देने में सफलता प्राप्त की है ।

महाविद्यालय के प्रति यहाँ के विद्यार्थियों का प्रेम इसी घटना से साबित होता है कि वर्ष 1892 में जब भारत पराधीन था तब भी यहां के पूर्व छात्रों ने एक आंदोलन करते हुए इस इंटर मीडियट कॉलेज को डिग्री कॉलेज में परिवर्तित करने हेतु 44,000 रुपए एकत्रित करके अंग्रेज सरकार को सौंपे थे । जिसके पश्चात यह महाविद्यालय वर्ष 1896 में डिग्री कॉलेज (कला संकाय) में परिवर्तित हुआ । उसके पश्चात सतत परिवर्तन समय की गति के साथ होते चले गए ।

महाविद्यालय का स्थापत्य शैली ब्रिटिश स्थापत्य कला से प्रारंभ हुई तथा आधुनिक भारतीय स्थापत्य शैली पर निर्माण कार्य सतत जारी है इस महाविद्यालय को आधुनिक स्वरूप देने में अनेक पुरोधा व्यक्तित्व हुए जो इतिहास के पन्नों में खो गए हैं ,उनके योगदान को अभिलेखों के माध्यम से जानने का प्रयास इस प्रोजेक्ट के तहत किया गया है अधिकांश अभिलेख द्विभाषी हैं इसलिए इस पुस्तक में हिंदी व अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया गया है तथा जिस तन्मयता से हमारे विद्यार्थियों ने यह कार्य किया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है मुझे आशा है की यह पुस्तक महाविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ साथ, उन पूर्व छात्रों, शिक्षकों और अजमेर से जुड़े लोगों को अत्यंत पसंद आएगी जो इस महाविद्यालय को अजमेर का गौरव मानते हैं ।

इतिहास की कहानी मुख्य साक्ष्यों की ज़बानी

इतिहास के विद्यार्थी होने के नाते हमारा सर्वप्रथम दायित्व यह है कि बिना मूल-आधार के कुछ ना लिखा जाए, ना कहा जाए और ना पढ़ा जाए। जब भी इतिहास के कटघरे में अतीत में घटित किसी घटना का वर्तमान में सटीक उल्लेख करना हो तो अभिलेखों से बढ़कर कोई गवाह नहीं हो सकता है।

इतिहास की नींव पर वर्तमान आकार लेता है। वर्तमान की यह जिम्मेदारी होती है कि अतीत के विभिन्न कालखंडों की घटनाओं, स्थितियों, शासन के आकार, प्रकार, प्रक्रिया तथा जीवन शैली से संबंधित सामग्री तथा अभिलेखों को संग्रहित करें। ताकि भविष्य की पीढ़ी उसे जाने, समझे और मानवीय जीवन को और अधिक परिमार्जित कर सकें।

मानव इतिहास की प्राचीनतम सभ्यता सिंधु घाटी से प्राप्त पत्थरों पर लिखे इबारत आज भी खामोश हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं स्वयं की दास्तान सुनाने का। पत्थरों पर लिखे यह इबारत मौर्य साम्राज्य में और अधिक स्पष्ट होने लगे। राजा महाराजाओं ने अपनी अपनी इबारत लिखने का कार्य प्रारंभ किया इस क्रम में जूनागढ़, प्रयाग प्रशस्ति, उदयगिरि, भीतर गांव, महरौली प्रशस्ति, बेसनगर, देवपाड़ा, मंदसौर व हाथीगुम्भा अभिलेख सामने आने लगे।

महाविद्यालय के हम इतिहास के विद्यार्थियों ने जब इतिहास को पढ़ने के साथ जानने का कार्य प्रारंभ किया तो हमारे मार्गदर्शक प्रो. धीरज पुरी गोस्वामी सर ने हमें महाविद्यालय का इतिहास लिखने के लिए प्रेरित किया। यह महाविद्यालय जिसकी स्थापना 1836 ई. में मानी जाती है, जिसमें 22 से अधिक विषयों के संकाय हैं तथा 10 से अधिक विशाल भवन हैं जिनमें कुल 232 कक्ष तथा 2 बड़े सभागार हैं। इन सबका संयुक्त इतिहास लिखना हम विद्यार्थियों के लिए वर्तमान परिस्थिति में कठिन था। फिर हमारे पिता तुल्य मार्गदर्शक ने हमें **राजकीय महाविद्यालय का इतिहास अभिलेखों के द्वारा** लिखने के लिए प्रेरित किया। इस प्रेरणा को आदेश समझकर हम निकल पड़े पत्थरों के इबारत को कागज पर उतारने के लिए।

सर्वप्रथम मैंने इस पूरे दल को दो भागों में विभक्त करके इन्हें महाविद्यालय परिसर के अभिलेखों को ढूंढ कर उनकी फोटो व जानकारी प्राप्त करने का कार्य प्रारंभ किया। इन दोनों दलों ने 1 सप्ताह में संपूर्ण महाविद्यालय का भ्रमण किया और अभिलेखों को ढूंढकर उनकी फोटो खींची व उनसे संबंधित जानकारी प्राप्त की। अब हमारे पास अभिलेखों की ढेर सारी फोटो तथा उनकी मूल जानकारी थी। उन्हें लैपटॉप की स्क्रीन पर क्रमवार रूप से क्रियान्वित करने की जिम्मेदारी मेरी थी। जब मैंने अपना कार्य आरंभ किया तो मुझे अब तक किया हुआ कार्य शुन्य प्रतीत होने लगा।

अंततः मैंने अपने सहयोगियों को एकत्रित किया और उन्हें इस कार्य को और अधिक स्पष्ट रूप से करने के लिए कहा। मेरे सभी मित्र एकत्रित हुए और पुनः निकल पड़े फोटो खींचने। फोटोग्राफी में अपनी दक्षता का परिचय देते हुए मेरे जूनियर, मेरे अनुज हर्षित जैन ने बहुत ही कम समय में अभिलेखों...



THE HISTORY
OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER
THROUGH
INSCRIPTIONS
1836-2023



लेखक



अतुल अहमद

स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध, इतिहास
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर



इतिहास की कहानी मुख्य साक्ष्यों की जबानी

व उनके भवनों के प्रत्येक कोने से लगभग 435 से अधिक फोटो खींची। अब मेरी बारी थी, महाविद्यालय में लगे प्राचीन अभिलेख हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में हैं। इसलिए मैंने निश्चय किया कि इस पुस्तक को भी द्विभाषा में लिखा जाये और यह पुस्तक अब आपके सामने हिंदी व अंग्रेजी दोनों ही भाषा में प्रस्तुत है। इस पुस्तक में महाविद्यालय के अभिलेखों का तिथिक्रमानुसार अध्ययन किया गया है। मेरे साथ मेरे सीनियर तथा मेरे अग्रज श्री रघुराज सिंह जी भाई सा और साथ ही मेरे सहपाठी सौरभ मीणा थे। हम तीनों ने गले में फीता (इंच टेप) डाला, हाथ में एक डायरी और पेन लेकर निकल पड़े। इस अद्भुत वेशभूषा के कारण हमें महाविद्यालय परिसर में मिस्त्री साहब व कई जगह हंसी मजाक में दर्जी साहब जैसे विलक्षण उपाधियों से भी सम्मानित किया गया।

हमने सभागार के सामने स्थित श्री फतेह लाल मेहता द्वारा निर्मित फव्वारा के प्रत्येक खंड को नापना प्रारंभ किया। अगले दिन हमारी छोटी सी टोली में हमारे किताबी मित्र, मेरे सहपाठी भीम कुंदनानी जुड़ गए। हमने महाविद्यालय का अब तक का ज्ञात सबसे प्राचीन भवन हेरीटेज भवन का मुआयना करने का निश्चय किया और उसके निर्माण शैली को समझने का प्रयास करने लगे। अगले कुछ दिनों बाद हमने हेरिटेज भवन की निर्माण शैली का पुनः जायजा लेना चाहा। इस बार हर्षित जैन हमारे साथ हो लिए। हमने मिलकर इस बार हेरिटेज भवन के प्रत्येक कोने को नाप लिया और उसकी एक जीवंत यात्रा किताब में समेटने का प्रयास किया।

अर्थात् यह कहा जा सकता है कि महाविद्यालय के विभिन्न भागों में मेरे सहयोगी दल ने इस भीषण गर्मी में भी सक्रियता से अपना कार्य करते हुए इस पुस्तक को अद्भुत रूप देने का प्रयास किया है, जिसके लिए मैं अपने समस्त सहयोगी लेखकों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

विशेषकर इसलिए भी कि इस पुस्तक को लिखने से लेकर पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने तक मानसिक, शारीरिक व आर्थिक रूप से हम विद्यार्थियों का ही योगदान रहा है, योगदान की इस कड़ी को हमारे पितातुल्य मार्गदर्शक ने एक जीवंत रूप दिया है, जिसके लिए मैं अपनी पूरी टीम की ओर से सर का ऋणी हूँ।

धन्यवाद।



THE HISTORY
OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER
THROUGH
INSCRIPTIONS
1836-2023

लेखक



अतुल अहमद

स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध, इतिहास
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर



Prof. DHIRAJ PURI GOSWAMI
Head of the Department

FACULTY MEMBERS

DEPARTMENT OF HISTORY
S.P.C. GOVT. COLLEGE, AJMER



Prof. DINESH BHARGAV



DR. MAHAK JAIN
Associate Professor



Prof. LATA AGARWAL



DR. DEENA KAUSHIK
Associate Professor



DR. JITENDRA MAROTHIA
Associate Professor



MR. PORAS KUMAR
Associate Professor



DR. SURESH KUMAR SANDHU
Assistant Professor



DR. SEEMA MEENA
Assistant Professor



THE HISTORY OF GOVERNMENT COLLEGE, AJMER THROUGH INSCRIPTIONS 1836-2023



ABOUT RESEARCH TEAM DEPARTMENT OF HISTORY, S.P.C. GOVT. COLLEGE, AJMER

Co-Writers

WRITER:-
ATHAR AHMED
M.A. Pre. HISTORY
S.P.C. Govt. College, Ajmer



RAGHURAJ SINGH
M.A. Final HISTORY
S.P.C. Govt. College, Ajmer



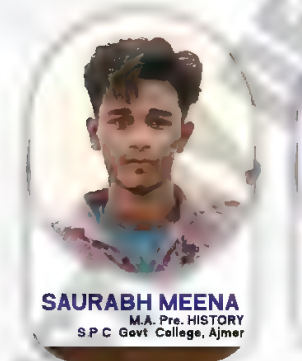
KULDEEP
M.A. Final HISTORY
S.P.C. Govt. College, Ajmer



VISHESHTA YADAV
M.A. Final HISTORY
S.P.C. Govt. College, Ajmer



BHEEM KUNDLANI
M.A. Pre. HISTORY
S.P.C. Govt. College, Ajmer



SAURABH MEENA
M.A. Pre. HISTORY
S.P.C. Govt. College, Ajmer



KHUSHI NARAWAT
B.A. Part II
S.P.C. Govt. College, Ajmer



HARSHIT JAIN
B.A. Hons Part I
S.P.C. Govt. College, Ajmer



GAURAV AMRANI
B.A. Hons Part I
S.P.C. Govt. College, Ajmer



HARSHIT BULA
B.A. Part I
S.P.C. Govt. College, Ajmer



मैं अभिलेख बोल रहा हूँ...

अभिलेख क्या है? इनका क्या महत्व है? हमें उनके बारे में क्यों जानना चाहिए?

परिभाषा- वह महत्वपूर्ण शीलाखंड या पत्थर जिस पर किसी विशेष उद्देश्य से विशेष घटनाओं व कार्यों को प्रचार व स्मृति के लिए खुदवा कर या लिखकर उत्कीर्ण किया जाता है।

बचपन में हम जब से सोचने, समझने लगे, जिज्ञासु बनने लगे तो हम जिस भी जगह घूमने जाते, उन्हें देखने के बाद मन में कई प्रश्न उठते हैं कि इनका निर्माण कब हुआ ? किसने करवाया ? क्यों करवाया ? किस विशेष स्मृति में करवाया ? किस उद्देश्य से करवाया ? इन सभी प्रश्नों का उत्तर हम अपने आसपास और विद्यालय की पढ़ाई के दौरान ढूँढते रहे हैं।

वर्तमान में भी हम देखते हैं कि मंदिरों, विद्यालयों, महाविद्यालयों, स्मारकों, उद्यानों आदि की दीवारों पर भी पत्थर के शिलाखंड पर निर्माण करवाने वाले का नाम, निर्माण के प्रारंभ और समाप्त होने की समय अवधि, अपनी ओर से दी गई सहायता या भेंट और धन्यवाद लिखा होता है।

प्राचीन समय से ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों, पुराने मंदिरों की दीवारों, दुर्गों, प्रसादों, झीलों के किनारे स्थित घाटों, बावड़ीयों के पास आदि पर बड़ी-बड़ी शिलाखंड अर्थात् पत्थरों पर खुदवाकर तथा लिखकर उत्कीर्ण किया जाता रहा है। जिन्हें अभिलेख कहते हैं। सामन्तों, राजाओं-रानियों, मंत्रियों एवं अन्य गणमान्य नागरिकों द्वारा किए गए निर्माण कार्यों, वीर पुरुषों की यशोगाथा आदि की जानकारी मिलती है। जो इतिहास को जानने और समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अभिलेख से हमें तत्कालीन समय के सरकार अथवा राजा, वंश, शासनकाल, साम्राज्य- विस्तार, राजा के महान विचार और उसके व्यक्तित्व तथा तत्कालीन समय की धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक बल्कि तत्कालीन भारतीय भाषा लिपि आदि की जानकारी भी प्राप्त होती है जो तत्कालीन समय के इतिहास को समझने के लिए वर्तमान में अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. धीरज पुरी गोस्वामी सर की प्रेरणा और आदेश से हमारी टीम को महाविद्यालय के इतिहास को जानने और समझने का कार्य दिया गया। इस कार्य में हमने अपना विशेष ध्यान महाविद्यालय की दीवारों पर लगी शिलालेख पर दिया क्योंकि यह शिलालेख महाविद्यालय के इतिहास को जानने के लिए हम सभी के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।

प्राचीन काल से शिलालेख लेखन परम्परा वर्तमान में भी प्रचलित है। यह देखकर, जानकर व समझकर हमें अत्यंत हर्ष हुआ। यह परम्परा प्राचीन काल से हमारे बीच आज भी जिंदा है और आगे भी जिंदा रहेगी। जो वर्तमान में इतिहास में किए गए उत्कृष्ट कार्य को जानने और उनसे शिक्षा लेने की प्रेरणा देती है इसी प्रकार यह जिंदा परंपरा हमारे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को भी शिक्षा और प्रेरणा देगी।

-विशेषता यादव

स्नात्कोत्तर उत्तरार्द्ध, इतिहास
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर



College Architecture

Our college building is the soul of our heritage, its architecture clearly signifies the construction activities that happened here since 17th Feb. 1868 when the foundation stone of the first building of our college was laid by General Keating (A.G.G. Rajputana).

Since then new buildings for various purposes like a pavilion, tennis court, gymnasium, laboratories, etc were added from time to time. All of these buildings are highly influenced by two major styles of modern architecture of colonial times: Indo – Gothic Style and Indo – Roman style.

Indo – Gothic Style The oversized windows and doors on the campus and overhanging eaves at the heritage building 1904 gives the blueprint of the Gothic style which got fused with our indigenous style.

Indo – Roman Style The Roman Tuscan (columns) present in the gallery adjoining the principal office, art block, and science block clearly indicate the Roman influence in architecture.

Vaults- The arches are commonly known as vaults, a common feature of both Roman and Gothic styles which can be seen in the old buildings of Arts Block, P.G. Block, and Science Block.

Another important feature of our campus's architecture is the vaulted ceilings that are designed to keep the rooms cool for extremely hot climates so that the hot air rises up and gets away from ventilators keeping the lower part cool for inhabitants.

The elevation of the swimming pool is designed in such a way that overflowed water from here is used to irrigate the campus gardens.

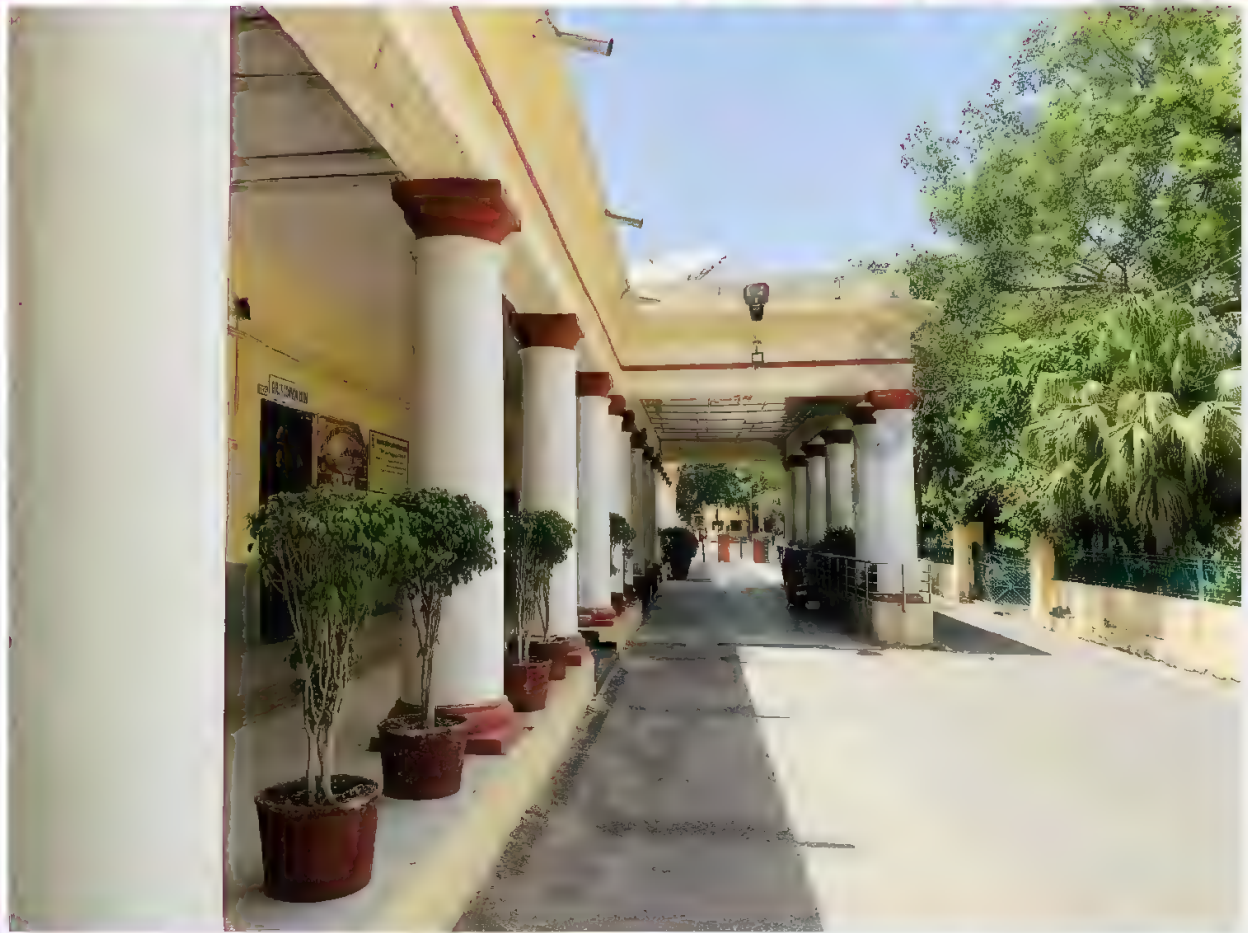
-BHEEM KUNDNANI

M.A. Previous, History

S.P.C.G.C.A.



College Architecture





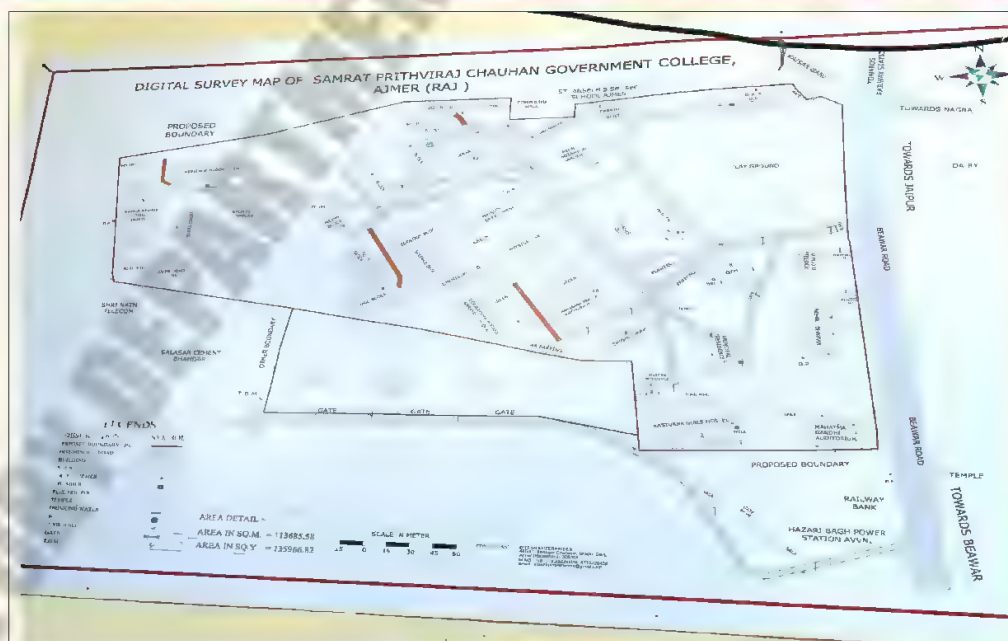
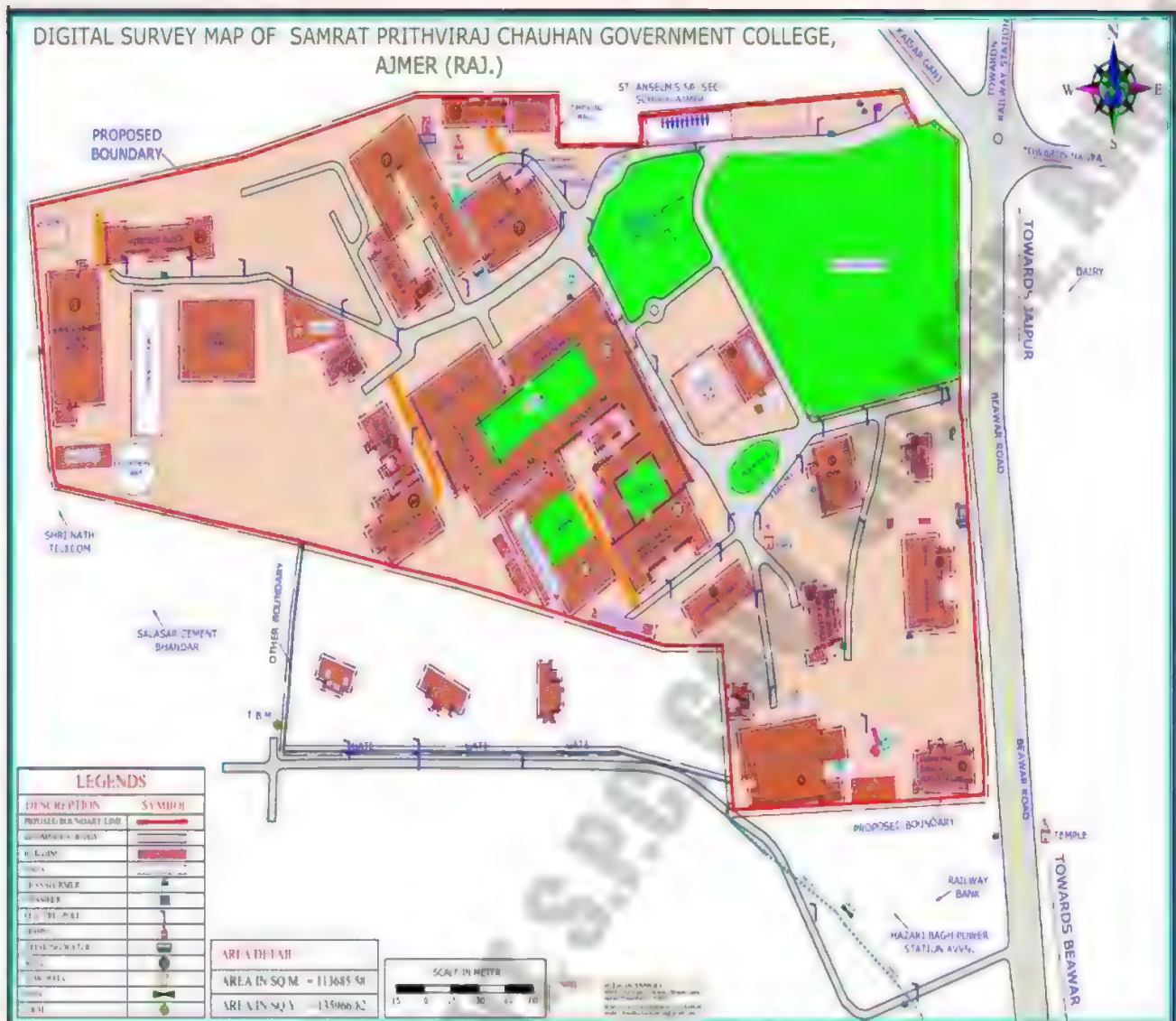
College Magazines (Available in College Library)

OLDEST PICTURE OF COLLEGE (PRINCIPAL CHAMBER AREA)





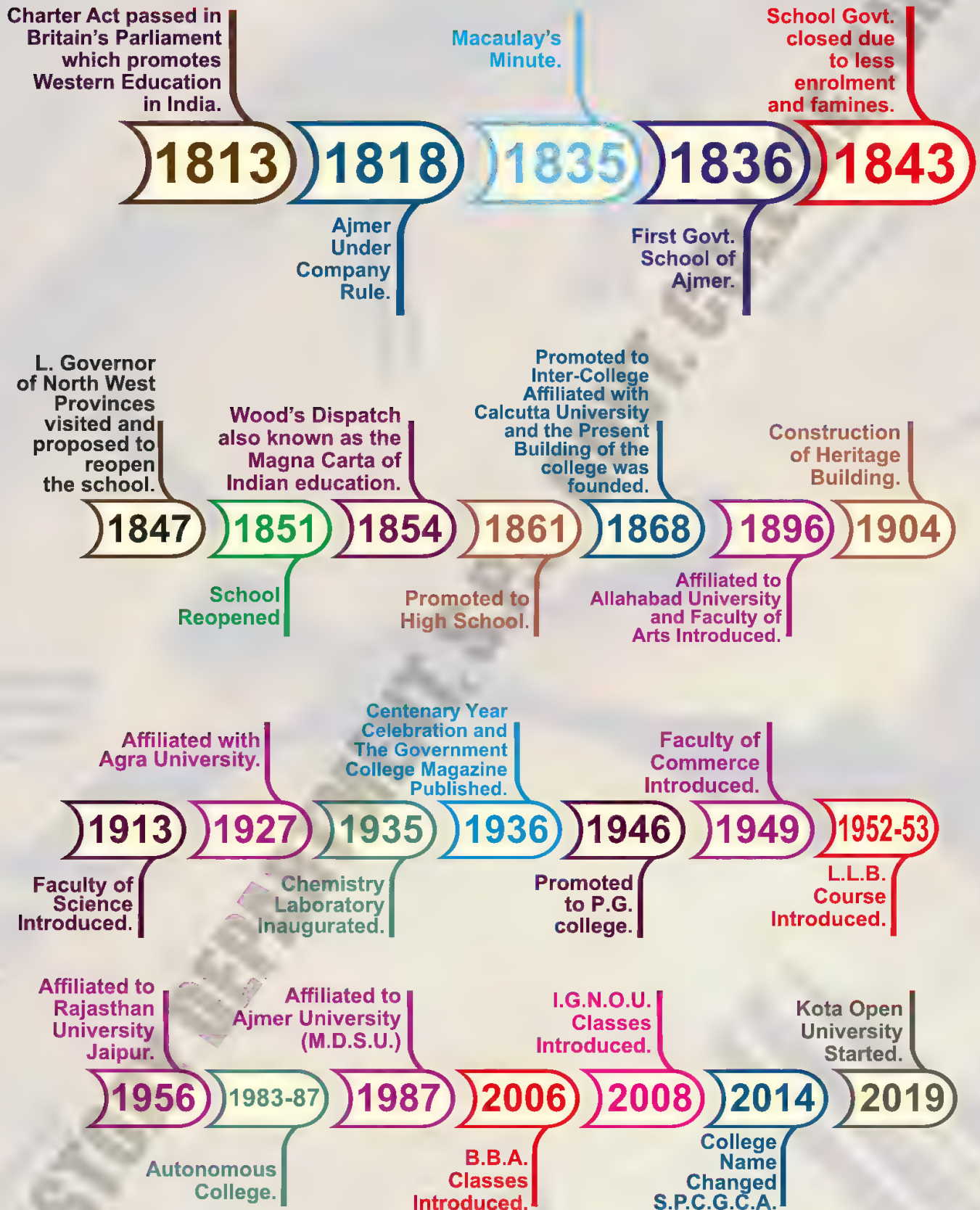
अजमेर का प्राचीन मानचित्र जिसमें महाविद्यालय का प्रवेश द्वार ईदगाह की ओर से दर्शाया गया है।
Ancient map of Ajmer showing the Entrance Gate of the college from the Eidgah side.



महाविद्यालय का वर्तमान मानचित्र, जिसकी एक प्रति महाविद्यालय के आर्ट्स ब्लॉक की दीवार पर लगी हुई है।
Current Map of College, whose one copy is pasted on the wall of Arts Block of College.

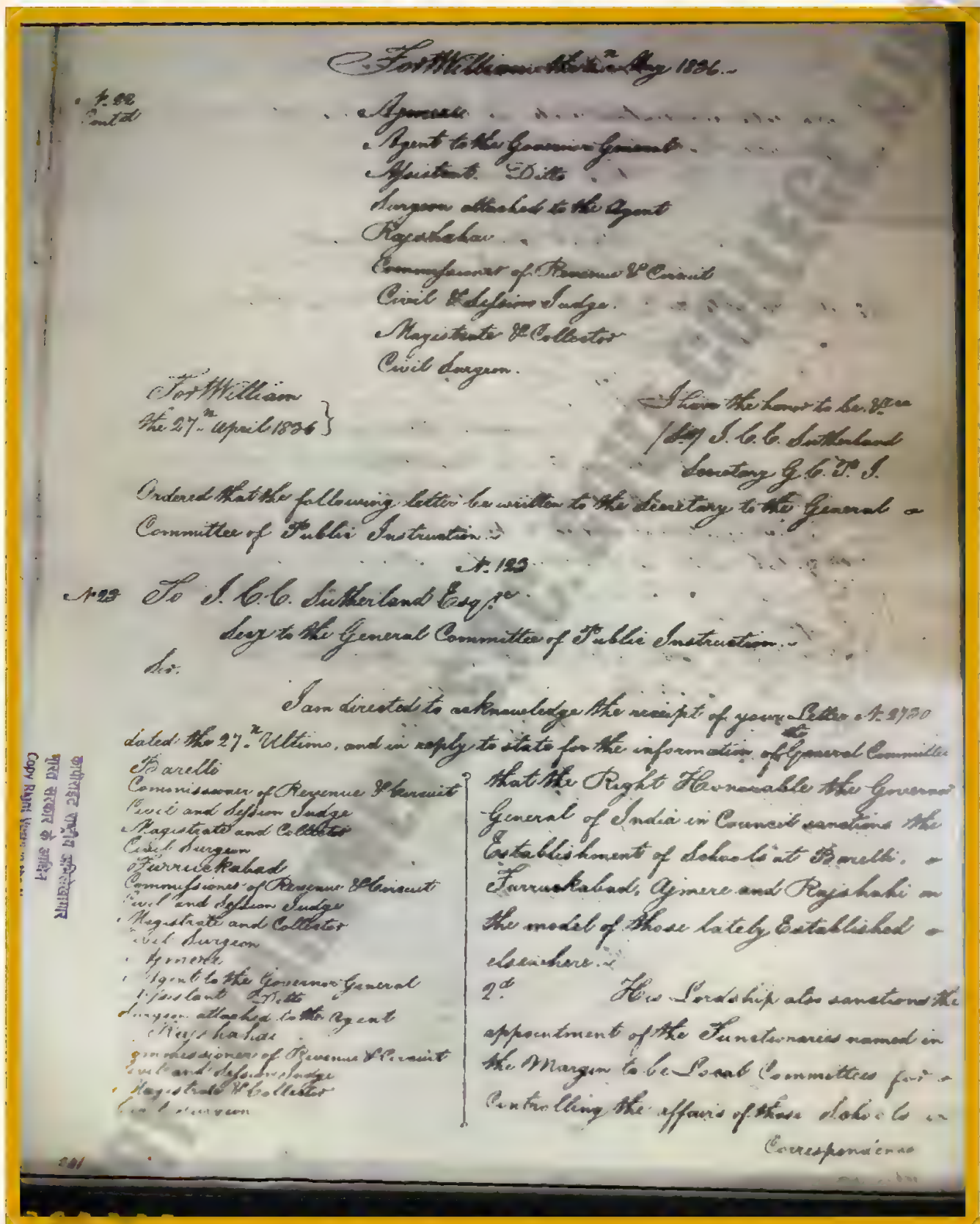


TIMELINE OF MAJOR EVENTS





BRITISH GOVERNMENT DOCUMENT - 1836.



Document related to the foundation of present Government College, Ajmer is available in National Archives, New Delhi and in The Principal Chamber.

वर्तमान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर की स्थापना से संबंधित दस्तावेज राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली तथा प्राचार्य कक्ष में भी उपलब्ध है।



COLLEGE NAME AMENDMENT ORDER 2014.

38
7/1/15

राजस्थान सरकार
शिक्षा (गुप-3) विभाग

क्रमांक 7(1)शिक्षा/गुप-3/2014

जयपुर, दिनांक: 17 दिसम्बर, 2014

:- आदेश :-

मंत्रिमण्डल की आज्ञा संख्या 150/2014 की अनुपालना में राजकीय महाविद्यालय, अजमेर का नामकरण एतद्वारा तत्काल प्रभाव से 'सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय', अजमेर किया जाता है।

615
J. B. 1000 PS/GCE/0
Dated 26/12/14

राज्यपाल की आज्ञा से:

हो/-

(कन्हैया लाल अग्रवाल)
उप शासन सचिव, उच्च शिक्षा

प्रतिनिधि निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित है:-

- 1 निजी सचिव, प्रमुख शासन सचिव, राज्यपाल राज्यपाल सचिवालय, जयपुर।
- 2 महालेखाकार राजस्थान जयपुर।
- 3 निजी सचिव प्रमुख सचिव, मुख्यमंत्री राजस्थान।
- 4 निजी सचिव मुख्य सचिव, राजस्थान।
- 5 विशिष्ट सहायक समस्त कैबिनेट/राज्यमंत्री राजस्थान।
- 6 निजी सचिव, समस्त अतिरिक्त मुख्य सचिव/प्रमुख शासन सचिव/विशिष्ट शासन सचिव/शासन सचिव, शासन सचिवालय, जयपुर।
- 7 निजी सचिव प्रमुख शासन सचिव मंत्रिमण्डल सचिवालय को मंत्री परिषद की उपरोक्त आज्ञा के सन्दर्भ में।
- 8 निजी सचिव/निजी सहायक, समस्त संयुक्त शासन सचिव/वरिष्ठ उप सचिव/उप सचिव शासन सचिवालय, जयपुर।
- 9 समस्त जिला कलेक्टर/जिला पुलिस अधीक्षक, राजस्थान, जयपुर।
- 10 आयुक्त, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर को यह उनकी पत्रावली संख्या एफ 12(01)आयो/निकाशि/2011 नोटशीट सहित प्रेषित कर लेख है कि कृपया सचिवालय को अपने स्तर से इस आदेश की प्रति भिजवाने का श्रम करावें।
- 11 निदेशक, वित्त (बजट) विभाग, राजस्थान जयपुर।
- 12 निदेशक सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग राजस्थान, जयपुर।
- 13 अधीक्षक राज्य-केंद्रीय मुद्रणालय राजस्थान, जयपुर को प्रेषित कर लेख है कि कृपया उपरोक्त आदेश का आपसी आसामात्र गजट नोटिफिकेशन में प्रकाशन करवाकर प्रकाशित गजट नोटिफिकेशन की दो प्रतियाँ अद्योहस्ताक्षरकर्ता को भिजवाने का श्रम करावें।
- 14 कुल सचिव, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर/एम डी एस विश्वविद्यालय अजमेर/जयनारायण विश्वविद्यालय, जयपुर/महाराजा गजसिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर/एम एस सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर/कोटा विश्वविद्यालय, कोटा/डी. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, जयपुर।
- 15 प्राचार्य, समस्त राजकीय स्नातकोत्तर/स्नातक/विधि महाविद्यालय, राजस्थान।
- 16 कोषाधिकारी, कोष कार्यालय, अजमेर।
- 17 रक्षित पत्रावली।

उप शासन सचिव, उच्च शिक्षा

आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: एफ 12 (01)आयो/निकाशि/11/1034
प्रतिनिधि -

दिनांक: 6/1/2015

- 1 निजी सचिव, आयुक्त, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर।
- 2 मुख्य लेखाधिकारी, कॉलेज शिक्षा, राजस्थान, जयपुर।
- 3 सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110 002
- 4 निदेशक, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) पी.ओ. बॉक्स नं. 1075 नागरबावी, बैंगलोर, 560072 कर्नाटक को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।
- 5 समस्त संयुक्त निदेशक, कार्षिक/स्थापना/निजी संस्थाएं/आयोजना के. रे. 5.1।
- 6 सहायक निदेशक क्षेत्रीय कार्यालय, कॉलेज शिक्षा, अजमेर।
- 7 वेबसाइट प्रभारी को विभागीय वेबसाइट पर अपलोड हेतु।
- 8 रक्षित पत्रावली।

संयुक्त निदेशक

उपरोक्त आदेशानुसार- 17 दिसम्बर, 2014 में महाविद्यालय के नाम का संशोधन करके सम्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर किया गया।

As per the above order- On December 17, 2014, the name of the college was amended to Samrat Prithviraj Chauhan, Government College, Ajmer.

HERITAGE BUILDING



वर्ष 1904 में स्थापित हेरिटेज भवन संयुक्त रूप से 5 भवनों का एक समूह है।

जिन्हें हमने अपने इस प्रोजेक्ट में प्रवेश मार्ग की ओर से भवन A,B,C,D, तथा E नाम दिया है।

जिसमें प्रथम व अंतिम भवन समान स्थापत्य शैली के हैं।

वहीं द्वितीय व चतुर्थ भवन भी समान स्थापत्य शैली के हैं। मध्य में स्थित तृतीय भवन, जिसके शीर्ष पर एक सफेद संगमरमर के पत्थर पर वर्ष 1904 उत्कीर्ण है। यह भवन अन्य 4 भवनों से आकार व आकृति में भिन्न है। इन सभी भवनों का निर्माण पत्थरों को एक दूसरे से जोड़कर किया गया है।

Established in the year 1904, Heritage Building is a group of 5 buildings combined.

Which we have named as Building: A,B,C,D and E from the entrance side in our project.

In which the first and the fifth building are similar in architecture.

At the same time, the second building and the fourth building are also similar in architecture.

The third building is located at the center of Heritage Block which consist which has the white marble stone with engraving of 1904 at it's top.

This structure is different size and shape from the other 4 buildings. All these buildings have been constructed by inter joining stones.

Sec. A

HERITAGE BUILDING



CORRIDOR

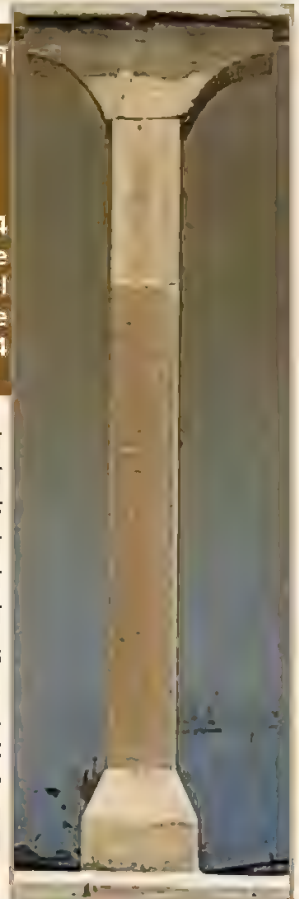


यह स्तम्भ 8 फुट ऊँचा है जो 4 भाग में निर्मित है। मध्य के दो भाग बड़े पत्थर के हैं। ऊपर व नीचे दो विशेष आकृति के पत्थर हैं। इस स्तम्भ की परिधि 48.5 इंच (4 फुट) है।

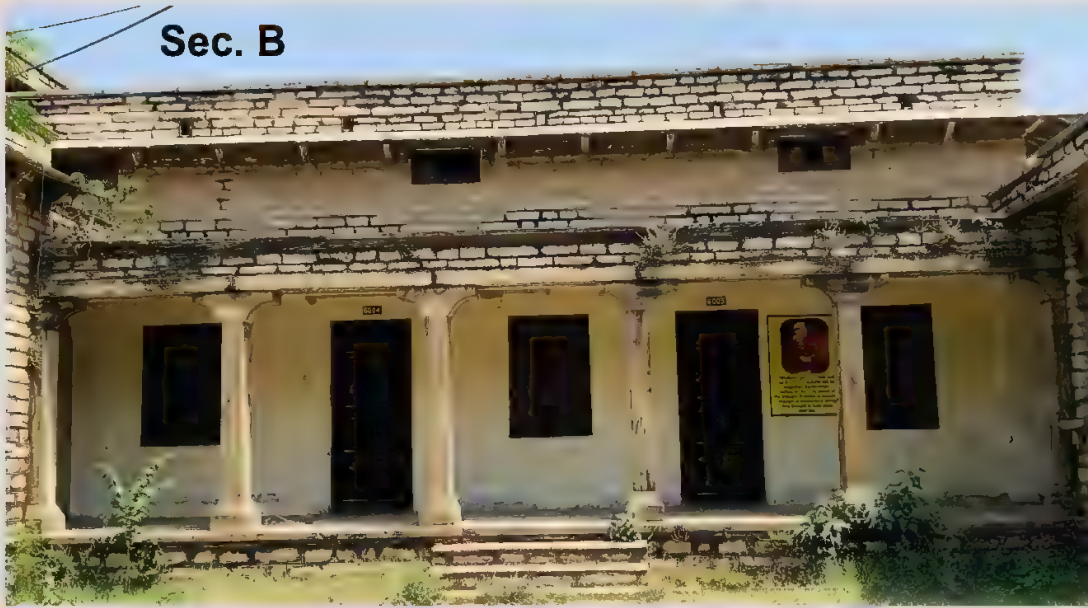
This pillar is 8 feet high which is built in 4 sections. The two blocks in the middle are of big stones. There are two special shaped stones on top and bottom. The perimeter of this pillar is 48.5 inches (4 feet).

यह भवन सामने की ओर से 36 फुट लम्बा है। तीन सीढ़ियाँ चढ़कर इस भवन में प्रवेश किया जाता है। प्रत्येक सीढ़ी की ऊँचाई 7 इंच है। अंतिम सीढ़ी की चौड़ाई 162 इंच है। सीढ़ियों चढ़ते ही इसके केंद्र में एक स्तम्भ है। इस भवन में एक कक्ष है। इसमें एक 41 इंच चौड़ी तथा 59 इंच लम्बी खिड़की भी है। इस भवन के सामने की ओर दो खिड़कियाँ तथा दायीं और बायीं तरफ भी एक-एक खिड़की है। इनमें से दो खिड़कियों को बाद में बंद कर दिया गया। इन खिड़कियों की ऊँचाई 6 फुट तथा

This building is 36 feet long from the front side. This building is entered by climbing three stairs. The height of each stair is 7 inches. width of the last stair is 162 inches. As soon as we climb the stairs, there is a pillar in the center of it. There is one room in this building. It also has a window that is 41 inches wide and 59 inches tall. There are two windows on the front side of this building and two windows on the right and left side also. Two of these windows has been closed later. The height of these windows is 6 feet and the width is 5 feet.



Sec. B



HERITAGE BUILDING

द्वार

GATE



इस भवन में प्रवेश करने के लिए भी तीन सीढ़ियाँ हैं। इन सीढ़ियों की लंबाई 84 इंच, ऊँचाई 6 इंच तथा चौड़ाई 12 इंच है।

इस भवन के सामने का भाग 4 स्तम्भों पर केंद्रित है। स्तम्भों की आकृति पूर्व के भवन के स्तम्भ के समान है।

इस भवन में 3 कक्ष हैं जिनकी दीवार पर तीन खिड़कियाँ हैं। कक्ष के द्वार की कुल लम्बाई 7.7 फुट, चौड़ाई 3.5 फुट है।

इस भवन के सामने के बरामदे की लम्बाई 46.6 फुट तथा चौड़ाई 8.75 फुट है।

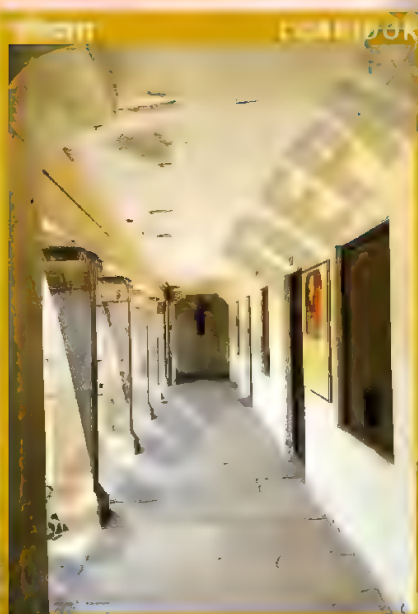
There are also three stairs to enter this building. The length of these stairs is 84 inches, height 6 inches and width 12 inches.

Front of this building rests on 4 pillars. The shape of the pillars is similar to the pillars of the earlier building.

There are 3 rooms in this building which have three windows on the wall.

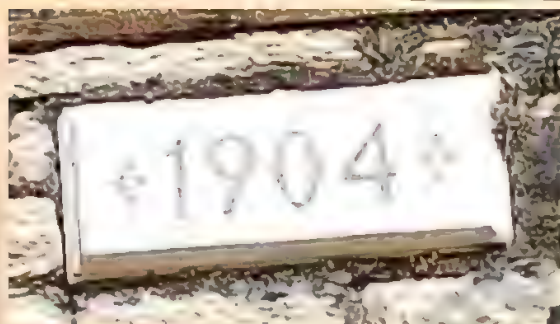
The dimensions of the door of the room is 7.7 feet tall and width is 3.5 feet.

The length of the porch of this building is 46.6 feet and the width is 8.75 feet.





HERITAGE BUILDING



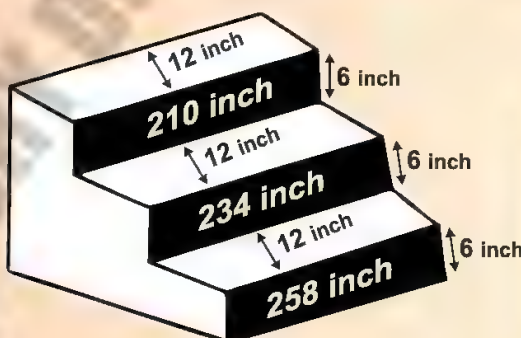
LOCATION : HERITAGE BLOCK
YEAR : 1904 A.D.
SIZE : 22.86 x 45.72 c.m.
SPECI. : WHITE STONE

राजकीय महाविद्यालय का अब तक का ज्ञात सबसे प्राचीन अभिलेख जो हेरिटेज भवन के भाग C की एक दिवार पर उत्कीर्ण है।

इस सफेद रंग के संगमरमर पत्थर पर लघु अभिलेख में इस भवन के निर्माण से संबंधित वर्ष 1904 उत्कीर्ण है। यह हेरिटेज भवन ब्रिटिशकालीन भारत के स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। इस भवन में 1 कक्ष है। यह भवन सामने से 40 फुट लम्बा है, इसमें 2 खिडकियां तथा 2 स्तंभ हैं। तीन सीढ़ियों को चढ़कर इस भवन में प्रवेश किया जा सकता है।



The oldest known inscription of the Government College, which is engraved on a wall of **Block C** of the Heritage Building. The Year 1904 related to the construction of this building is engraved in this white marble stone. This heritage building is a unique example of the architecture of British India. This building has 1 room. This building is 40 feet long from the front, it has 2 windows and 2 pillars. This building can be entered by climbing three stairs.



Sec. D



भाग D की आकृति व आकार भाग B के समान है।
The shape and size of Sec.D is similar to that of Sec.B.



BACK VIEW OF BUILDING

भवन के पीछे के भाग में भी दो
द्वार व तीन खिड़कियां हैं।
खिड़कियों के ऊपर छज्जा है।
There are two doors and
three windows in the
rear part of the building.
There is a window
sunshade over the
windows.

भवन के पीछे के भाग में दो द्वार
व तीन खिड़कियां हैं।
खिड़कियों के ऊपर छज्जा है।
There are two doors and
three windows in the
rear part of the building.
There is a window
sunshade over the
windows.

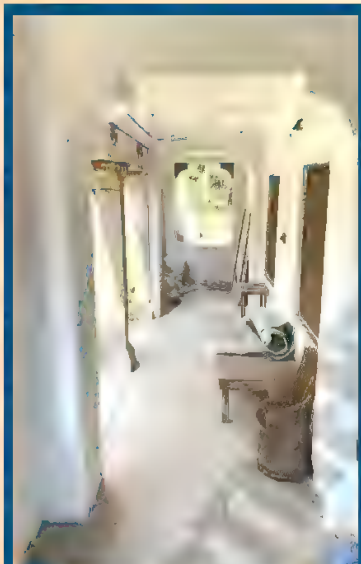


BACK VIEW OF BUILDING

HERITAGE BUILDING

HERITAGE BUILDING

Sec. E



FRONT PORCH

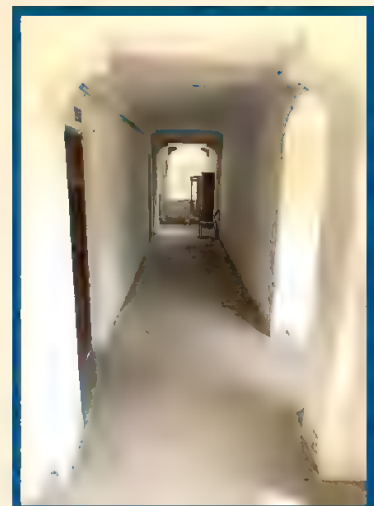
भाग E - भाग A के समान है। इसमें सामने की ओर 1 कक्ष है जिसमें 2 खिड़कियां हैं।

वहीं गलियारे में दो कक्ष हैं। इस भाग के गलियारे की लंबाई 31.8 फुट है, जो सामने के भाग को पीछे के भाग से जोड़ता है।

Section E is similar to Section A. But it has 1 room in the front which has 2 windows.

There are two rooms in the corridor.

Length of the corridor of this section is 31.8 feet which connects the front part to the rear part.



HERITAGE WELL



LOCATION : SCIENCE BLOCK
YEAR : 1920 A.D.
SIZE : 15.3x6.4 c.m.
SPECI. : IRON



विज्ञान भवन वर्तमान समय में डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भवन में स्थित रसायन शास्त्र विभाग के पीछे एक पुराना कुँआ है। संभवतः यह कुँआ महाविद्यालय परिसर के लिए जल का प्रमुख स्रोत रहा है।

भारत-बर्मा के इंजीनयरों द्वारा निर्मित इस विशालकाय यांत्रिक उपकरण की सहायता से कुँए से पानी निकाला जाता था। यह विशालकाय उपकरण वर्तमान समय में भी कुँए पर स्थित है। हालाँकि अभी यह उपकरण उपयोग में नहीं है।

इस विशालकाय उपकरण पर लगे एक **लौह पट्टी** पर उत्कीर्ण जानकारी से इस उपकरण के निर्माता का ज्ञान प्राप्त होता है। इस लौह पट्टी पर अंग्रेजी में **Jessop & Company Ltd. Engineers INDIA & BURMAH** उत्कीर्ण है।

An Heritage Well behind the chemistry department located in Science Block known as Dr. A.P.J. Abdul Kalam Bhavan. Probably this well would have been the main source of water for the college campus.

Water was extracted from the well with this huge mechanical equipment made by the **Engineers of India-Burma**. Mechanical Pulley is still located on the well. However this device is not in use right now.

Information engraved on an iron bar mounted on this giant instrument gives the knowledge of the maker of this instrument. In English on this iron bar - **Jessop & Company Ltd Engineers INDIA & BURMAH** is engraved.





Jessop & Company Ltd Engineers

In the year 1788, well-known engineer of England William Jessop's sons had established **Jessop & Company Ltd Engineer** in Calcutta.

In the year 2003, the government of India had auctioned this company to a private company **Ruia Group** under the policy of privatization.

इंग्लैंड के सुविख्यात इंजीनयर विलियम जैसेप के पुत्रों ने वर्ष 1788 ई में कलकत्ता में **Jessop & Company Ltd Engineer** की स्थापना की थी।

वर्ष 2003 में भारत सरकार ने निजीकरण की नीति के तहत इस कम्पनी की नीलामी एक निजी कम्पनी **रुइया ग्रुप** को कर दी थी।

1815-1840: First iron bridge (Lohe Ka Pul) over Gomti at Lucknow.

1819: First steam boat to sail on Indian waters.

1890: First steam road roller for Indian road and other construction.

1937-1943: First semi balance cantilever bridge over Hooghly River Howrah Bridge at Kolkata.

1959: First Electrical Multiple Unit (EMU) coach for Indian Railways.

1976: Caisson gates for Haldia Dock Project, first time in India.

1983: Container Quay crane for Madras Port Trust.

1993: Second Hooghly Bridge over river Hooghly (it is a Cable stayed Bridge – first in India.)



1815-1840: लखनऊ में गोमती के ऊपर पहला लोहे का पुल।

1819: भारत में जल में पहली भाप से चलने वाली नाव।

1890: भारतीय सड़क और अन्य निर्माण के लिए पहला स्टीम रोड रोलर।

1937-1943: हुगली नदी पर पहला सेमी बैलेंस कैंटिलीवर ब्रिज कोलकाता में हावड़ा ब्रिज। (सहयोगी)

1959: भारतीय रेलवे के लिए पहला इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (ईएमयू) कोच।

1976: भारत में पहली बार हल्दिया डॉक परियोजना के लिए कैसाँन गेट्स।

1983: मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के लिए कंटेनर क्वे क्रेन।

1993: हुगली नदी पर दूसरा हुगली पुल (यह एक केबल स्टे ब्रिज है - भारत में पहला।

LOCATION : CIRCLE
YEAR : 1932-37 A.D.
SIZE : 19 c.m.
SPECI. : WHITE STONE

INSCRIPTION AT HERITAGE WATER FOUNTAIN

महाराणा प्रताप लघु उद्यान में स्थित इस आकर्षक फव्वारे का निर्माण उदयपुर के श्री फतेह लाल मेहता ने सर जार्ज क्लाइव के सम्मान में करवाया था।

सर क्लाइव वर्ष 1932-37 तक अजमेर-मेवाड़ के चीफ कमिश्नर रह चुके हैं। श्री फतेह लाल मेहता भी अपने युग में इस राजकीय महाविद्यालय के छात्र रह चुके हैं।

यह फव्वारा अपने सीढ़ीदार प्लेटफार्म के अतिरिक्त 8 खंडों में निर्मित है। जिसमें प्रथम खंड एक अष्टकोणीय बेलनाकार पत्थर है। जिसके ऊपर आकर्षक फव्वारा निर्मित है।



FATEH LAL MEHTA

फतेह लाल मेहता



ERECTED
BY
MEHTA FATEH LAL, UDAIPUR
IN HONOUR
OF
THE HON'BLE SIR GEORGE OCILVIE, K.C.I.E.,
CHIEF COMMISSIONER AJMER-MERWARA 1932-37.

This attractive fountain located in Maharana Pratap's miniature garden was built by Shri. Fateh Lal Mehta of Udaipur in honor of Sir George Ocilvie.

Sir Ocilvie had been the Chief Commissioner of Ajmer-Mewar from the year 1932-37.

Shri. Fateh Lal Mehta has also been a student of this Government College in his era.

This fountain is constructed in 8 sections apart from its terraced platform. In which the first section is an octagonal cylindrical stone. On top of which a magnificent fountain is built.

ERECTED
BY
MEHTA FATEH LAL, UDAIPUR,
IN HONOUR
OF
THE HON'BLE SIR GEORGE OCILVIE, K.C.I.E.,
CHIEF COMMISSIONER, AJMER-MERWARA 1932-37.

STRUCTURE - HERITAGE WATER FOUNTAIN

यह तीन तल में निर्मित है। प्रत्येक तल अपने निचले तल से समान आकृति में छोटा है।

प्रथम तल: इसके एक कोण की लम्बाई 77 इंच है, अर्थात 8 कोणों की कुल लम्बाई 616 इंच (लगभग 51.3 फुट) है। इसकी ऊंचाई 7.3 इंच तथा चौड़ाई 7 इंच है।

द्वितीय तल: इसके एक कोण की लम्बाई 73 इंच है, अर्थात 8 कोणों की कुल लम्बाई 584 इंच (लगभग 48.7 फुट) है। इसकी ऊंचाई 5.9 इंच तथा चौड़ाई 7 इंच है।

तृतीय तल: इसके एक कोण की लम्बाई 53.2 इंच है, अर्थात 8 कोणों की कुल लम्बाई 425.6 इंच (लगभग 35.5 फुट) है। इसकी ऊंचाई 5.9 इंच तथा चौड़ाई 7 इंच है।

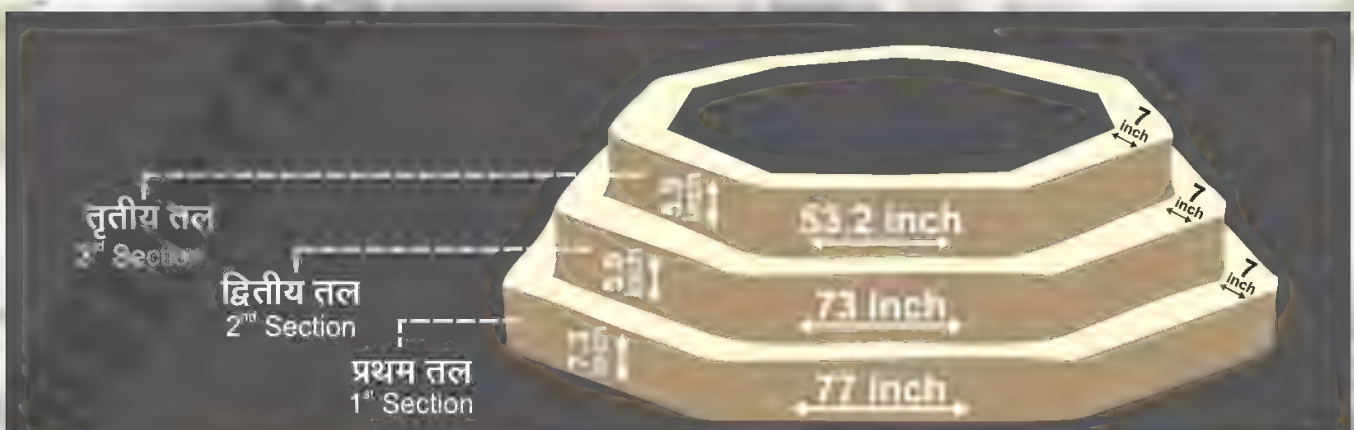


The Fountain is erected on a platform consisting 3 section. Each section is smaller in shape than it's preceding one.

First Section: The length of it's one side is 77 inches, which means the total length of the 8 sides is 616 inches (Approx 51.2 feet). it's height is 7.3 inches and width is 7 inches.

Second Section: The length of it's one side is 73 inches, which means the total length of the 8 sides is 584 inches (Approx 48.7 feet). it's height is 5.9 inches and width is 7 inches.

Third Section: The length of it's one side is 53.2 inches, which means the total length of the 8 sides is 425.6 inches (Approx 35.5 feet). it's height is 5.9 inches and width is 7 inches.



STRUCTURE - HERITAGE WATER FOUNTAIN



तीन अष्टकोणीय सीढ़ीदार प्लेटफार्म के ऊपर एक और अष्टकोणीय प्लेटफार्म है। जिसकी ऊंचाई 21.1 इंच (1.8 फुट) है तथा इसके प्रत्येक कोण की लम्बाई 28.5 इंच (2.4 फुट) है। इसी प्लेटफार्म की दिवार पर इस फव्वारे से संबंधित अभिलेख लगा हुआ है।

Above the octagonal platform there is octagonal basin, whose height is 21.1 inches (1.8 feet) and the length of it's each side is 28.5 inches (2.4 feet). There is an inscription regarding this fountain on the wall of this platform.

यह एक अष्टकोणीय बेलनाकार पत्थर है।

जिसकी ऊंचाई 44 से.मी. (1.5 फुट) है तथा इसके प्रत्येक कोण की चौड़ाई 14 से.मी. है।

It is an octagonal cylindrical stone. Whose height is 44 cm (1.5 ft) the breadth of it's each side is 14 cm.

खंड 1

Section: 1



STRUCTURE - HERITAGE WATER FOUNTAIN



इसकी निचली परिधि 89 से.मी. तथा ऊपरी परिधि 44 से.मी. है। इस प्रकार इसकी कुल ऊंचाई 22.2 से.मी. है।

इसके मध्य में तीन हंस की आकृति उत्कीर्ण है। इन तीनों हंसों की चौंच खंडित अवस्था में है।

It's lower circumference is 89 cm and upper circumference is 44 cm. Thus it's total height is 22.2 cm. The figure of three swans is engraved in the middle of it. The beaks of these three swans have been broken.

इस खंड की निचली परिधि 44 से.मी. तथा ऊपरी परिधि 38 से.मी. है।

इस प्रकार इसकी कुल ऊंचाई 25 से.मी. है। इसके मध्य में भी तीन हंसों की आकृति उत्कीर्ण है और इन तीनों हंसों की चौंच खंडित हैं। प्रत्येक हंस के शीश पर 6 पत्तों की एक आकृति भी बनी हुई प्रतीत होती है।

It's lower circumference is 44 cm and upper circumference is 38 cm. Thus it's total height is 25 cm. The figure of three swans is also engraved in its middle and the beaks of these three swans are broken. There is also a shape of 6 leaves on the head of each swan.



STRUCTURE - HERITAGE WATER FOUNTAIN

यह एक फूलदार आकृति है जिसके नीचे की ओर 12 पत्तियां झुकी हुई हैं तथा ऊपर की ओर समान रूप से 12 आकृति बनी हुई है। इसकी ऊपरी आकृति की परिधि 164 सेमी (5.4 फुट) है। इसमें अंदर की ओर एक 11.5 सेमी लम्बाई का बेलनाकार पत्थर है जिसकी परिधि 45 सेमी है। इसी बेलनाकार पत्थर पर ऊपर के खंड टिके हुए हैं।



It is a flower shape with 12 leaves curling downwards and on the upper side, 12 figures are made equally. The circumference of its upper figure is 164 cm (5.4 ft). There is a cylindrical stone inside it whose length 11.5 cm, circumference is 45 cm. The upper sections rest on this cylindrical stone.

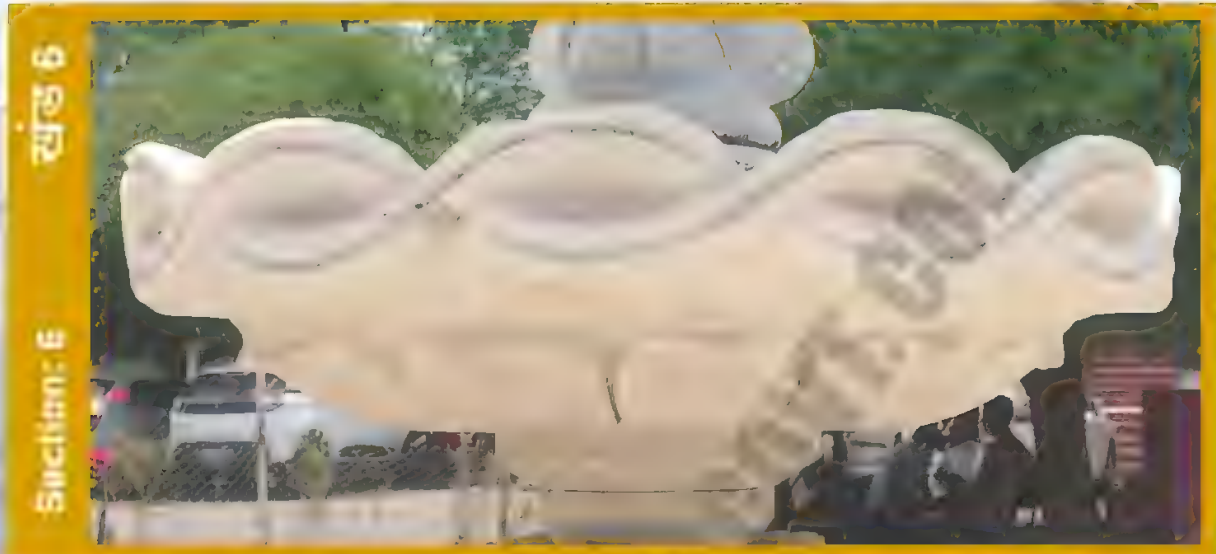
खंड 5 की संरचना खंड 3 के समान है। किन्तु इसकी निचली परिधि 42 सेमी, ऊपरी परिधि 38 सेमी तथा कुल ऊंचाई 26 सेमी है।

Section 5 has the same structure as Section 3. But its lower circumference is 42 cm, upper circumference is 38 cm and total height is 26 cm.



STRUCTURE - HERITAGE WATER FOUNTAIN

खंड 6 की संरचना खंड 4 के समान है, किन्तु इसकी ऊँचाई 18 से.मी. है। इसमें 12 के स्थान पर सिर्फ 10 पत्तियों की ही आकृति है तथा इसके बेलनाकार पत्थर की परिधि 38 सेमी तथा ऊँचाई 10 से.मी. है।



Section 6 has the same structure as Section 4 but it's height is 18 cm. It has the shape of only 10 leaves instead of 12 and the circumference of its cylindrical stone is 38 cm and height is 10 cm.

खंड 6 की संरचना खंड 4 के समान है, किन्तु इसकी ऊँचाई 18 से.मी. है। इसमें 12 के स्थान पर सिर्फ 10 पत्तियों की ही आकृति है तथा इसके बेलनाकार पत्थर की परिधि 38 सेमी तथा ऊँचाई 10 से.मी. है।

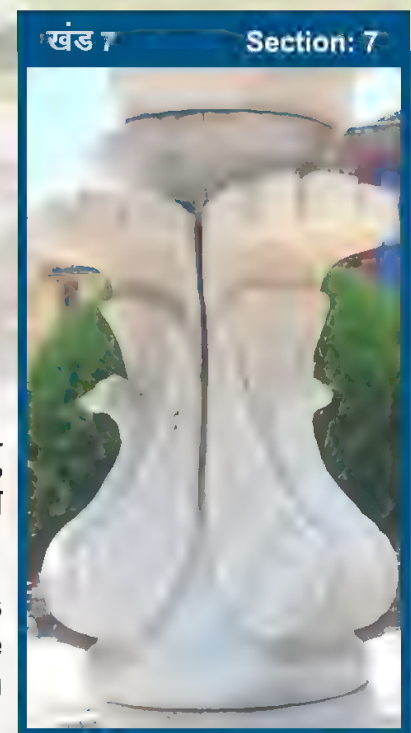
Section 8 has the same structure as Section 6. But it's lower circumference is 38.1 cm and total height is 15 cm. This figure is in a damaged condition from one side. For that circumference can't be measured.



The circumference of the cylindrical stone inside it is 15 cm and the length is 7.5 cm.

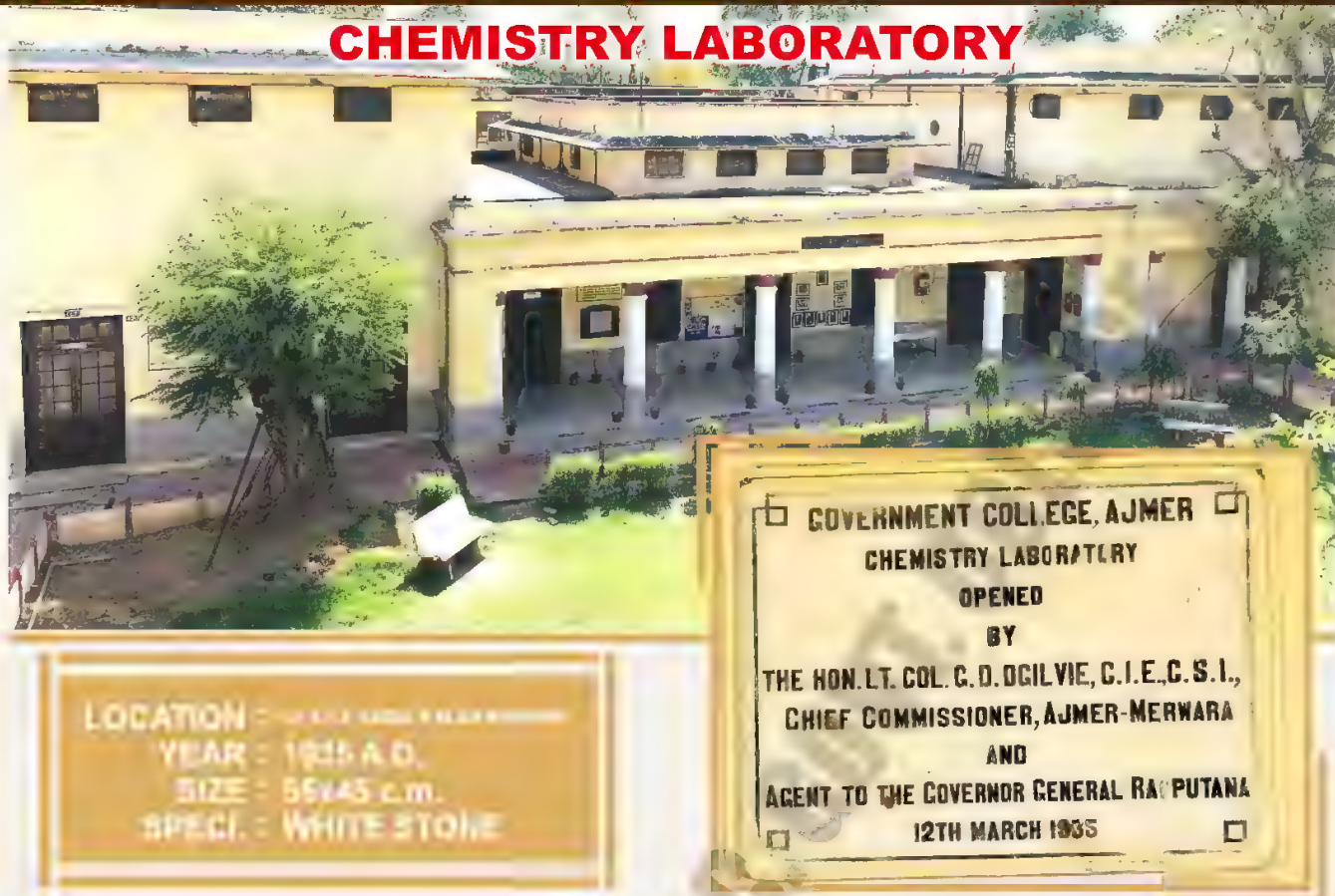
खंड 7 की संरचना खंड 5 के समान है। किन्तु इसकी निचली परिधि 38 सेमी, ऊपरी परिधि 35 सेमी तथा कुल ऊँचाई 23 सेमी है।

Section 7 has the same structure as Section 5. But its lower circumference is 38 cm, upper circumference is 35 cm and total height is 23 cm.





CHEMISTRY LABORATORY



विज्ञान भवन, वर्तमान में डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भवन के नाम से प्रसिद्ध, स्थित रसायन शास्त्र विभाग की दिवार पर लगे इस श्वेत पत्थर के शिलालेख से इस विभाग की प्रयोगशाला के उद्घाटन से संबंधित जानकारी प्राप्त होती है।

इस शिलालेख के अनुसार 12 मार्च, 1935 ई को तत्कालीन राजपुताना के केंद्रीय गवर्नर एजेन्ट तथा अजमेर-मेवाड़ के तत्कालीन चीफ कमिश्नर लेफ्टिनेंट कोलेनियल जी.डी.ऑग्लिव ने रसायन शास्त्र विभाग की प्रयोगशाला का उद्घाटन किया था। जी.डी.ऑग्लिव ब्रिटिश कालीन भारत के सफल प्रशासकों में से एक थे।

वर्तमान रसायनशास्त्र विभाग में ब्रिटिश काल में निर्मित कक्षा भी यथास्थिति में हैं। इस पुरानी कक्षा में लकड़ी की कुर्सियां व इससे जुड़ी हुई टेबल भी यथास्थिति में हैं।



Information related to the establishment of the Chemistry Department Laboratory is obtained from this white stone inscription on the wall of the Department, located in Science Block currently known as Dr. A.P.J. Abdul Kalam Bhavan. According to this inscription, on March 12, 1935, Central Governor Agent of Rajputana and the Chief Commissioner of Ajmer-Mewar, Lt. Col. G.D. Ogilvie, had opened the Laboratory of Chemistry. G.D. Ogilvie, was one of the successful administrator of British India. In the current chemistry department, the classrooms built during the British era are also well maintained. In this old classroom, the wooden chairs and the table attached to it are also in their actual condition.



THEN



12 मार्च, 1935 ई. को जी.डी.ऑग्लिव ने रसायन शास्त्र विभाग की प्रयोगशाला का उद्घाटन किया था।

वर्ष 1927 ई. में विभाग में स्नातक पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया था, उसके पश्चात् वर्ष 1956ई. में विभाग में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई है।

विभाग के प्रथम अध्यक्ष श्री राय बहादुर हरिप्रसाद थे जिनका विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यकाल वर्ष 1940ई. तक रहा।

On 12 March, 1935 G.D. Oglivie inaugurated the Laboratory of Department of Chemistry.

In the year 1927 AD, the U.G. course was started in the department, in the year 1956 AD, the P.G. course was started in the department.

The first Head of the department was Mr. Rai Bahadur Hariprasad, who remained as Head of the Department till 1940 AD.



LABORATORY



CURRENT VIEW OF BUILDING

NOW



BOTANICAL GARDEN

LOCATION : GARDEN
YEAR : 1942 A.D.
SIZE : 23.2x47.3 c.m.
SPECI. : WHITE STONE

महाविद्यालय के बोटैनिकल गार्डन में स्थित भूतपूर्व प्राचार्य पी. शेषाद्रि की श्वेत पत्थर से निर्मित प्रतिमा के नीचे लगे इस अभिलेख से ज्ञात होता है कि वर्ष 1931-1942 तक पी. शेषाद्रि राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य पद पर आसीन थे।

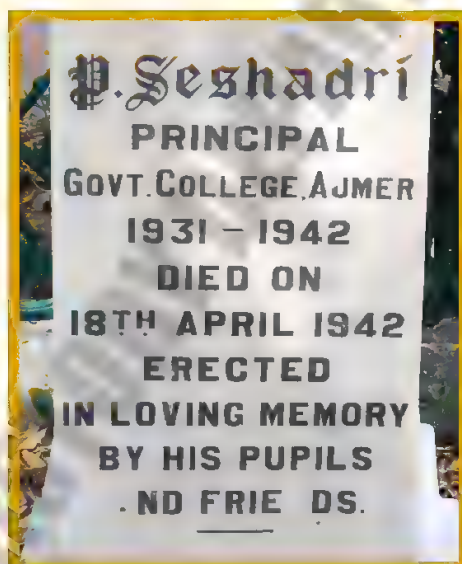
18 अप्रैल 1942 ई को पी. शेषाद्रि देवलोक प्रस्थान कर गये। पी. शेषाद्रि की मृत्यु के उपरांत उनके शिष्यों एवं मित्रों द्वारा वर्तमान बोटैनिकल गार्डन में उनकी प्रतिमा स्थापित की गयी।

इस प्रतिमा में पी. शेषाद्रि के वस्त्रों को बड़ी सहजता से उत्कीर्ण किया गया है। जिसमें उनके कोट व टाई को तथा कोट के अंदर पहने शर्ट के बटन को सुसज्जित रूप से उत्कीर्ण किया गया है।

It is known from the inscription on the statue made of white stone of Former Principal P. Seshadri located in the Botanical Garden of the college that P.Seshadri was the principal of the Government College from the year 1931-1942.

On 18 April 1942, P. Seshadri had passed away. After the death of P. Seshadri, his statue was installed in the present Botanical Garden by his disciples and friends.

In this statue, the clothes of P. Seshadri have been engraved in attractive very. In which his coat and tie and the button of the shirt worn inside the coat have been elaborately engraved.



CENTENARY PAVILION



LOCATION : CENTENARY PAVILION
YEAR : 1942 A.D.
SIZE : 46x41 c.m.
SPECI : WHITE STONE

This inscription is installed on the wall in the building of this small sports complex located near the Botanical Garden.

According to this record, this sports complex was built by Lieutenant Colonel J.C. Chatterjee, the then Superintendent of Education, Delhi and the British Agent of Ajmer-Mewar on October 24, 1942 AD.

Presently this complex has been converted into an indoor game complex. It belongs to the sports complex.

बोटेनिकल गार्डन के समीप स्थित इस लघु खेल परिसर के भवन में यह अभिलेख दिवार पर स्थापित है।

इस अभिलेख के अनुसार इस खेल परिसर का निर्माण लेफ्टिनेंट कोलेनियल जे.सी. चटर्जी, तत्कालीन शिक्षा अधीक्षक, दिल्ली तथा अजमेर - मेवाड़ के ब्रिटिश एजेंट द्वारा 24 अक्टूबर, 1942 ई में किया गया था।

वर्तमान समय में इस परिसर को इंडोर गेम परिसर के रूप में रूपांतरित कर दिया गया है।

CENTENARY PAVILION
OPENED BY
LT.-COL. J.C. CHATTERJEE, M.A.
SUPDT. OF EDUCATION, DELHI,
AJMER - MERWARA & C.I.
ON 24TH OCTOBER 1942

LIBRARY

महाविद्यालय परिसर में ज्ञान की ज्योति को प्रकाशित करने के लिए रविवार 26 अक्टूबर, 1958 ई. को तत्कालीन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष डॉ.सी.डी. देशमुख द्वारा एक बहुमंजिला विशालकाय पुस्तकालय की नींव रखी गयी।

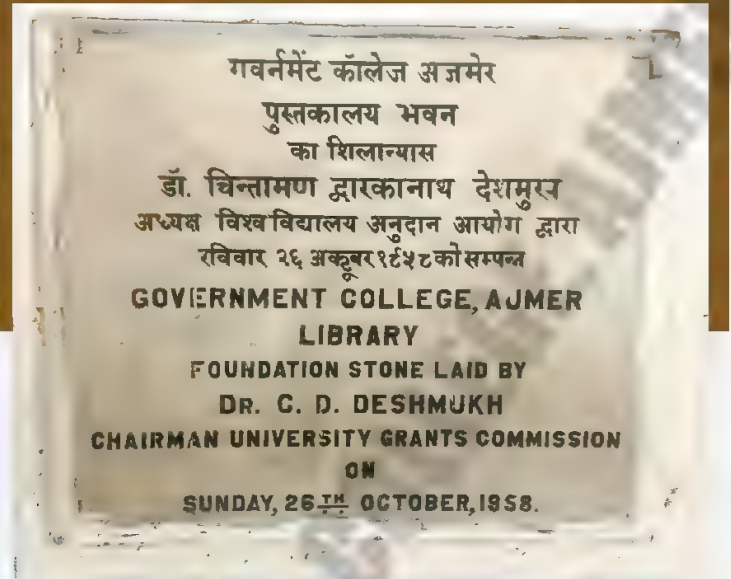
वर्तमान समय में इस ज्ञान के ज्योति रुपी पुस्तकालय में 1,50,000 से भी अधिक विभिन्न विषयों की पुस्तकें संरक्षित है। प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर उनके अध्ययन के लिए एक वातानुकूलित कक्ष का भी प्रबंध किया गया है। इस कक्ष में देश-विदेश की प्रसिद्ध पत्रिकाएँ प्रचुर मात्रा में हर समय उपलब्ध रहती हैं।

शोधार्थियों के लिए भी पुस्तकालय के प्रथम तल पर अध्ययन के लिए विशेष प्रबंध है। इस शोधकक्ष में शोध से संबंधित विशेष पुस्तकें क्रमवार रूप से सुसज्जित करने का कार्य प्रगति पर है।

किताबों के साथ समय बिताने वाले छात्रों के लिए विशेष रूप से एक आधुनिक कक्ष संरक्षित किया गया है। जिसमें देश विदेश की अनेक पत्रिकाएँ, जर्नल्स, विशेष पुस्तकें, तथा कंप्यूटर लैब भी उपलब्ध है।

इनके अतिरिक्त भू-तल में प्राचीन ताम्रपत्रों व पुस्तकों को संरक्षित करके विशेष अलमारी में रखा गया है। इन्हीं अलमारियों में एक हेरिटेज अलमारी भी है।

हेरिटेज अलमारी में मुख्यतः उन पुस्तकों को संरक्षित किया गया है जो साधारणतः बाजार या इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध नहीं है।

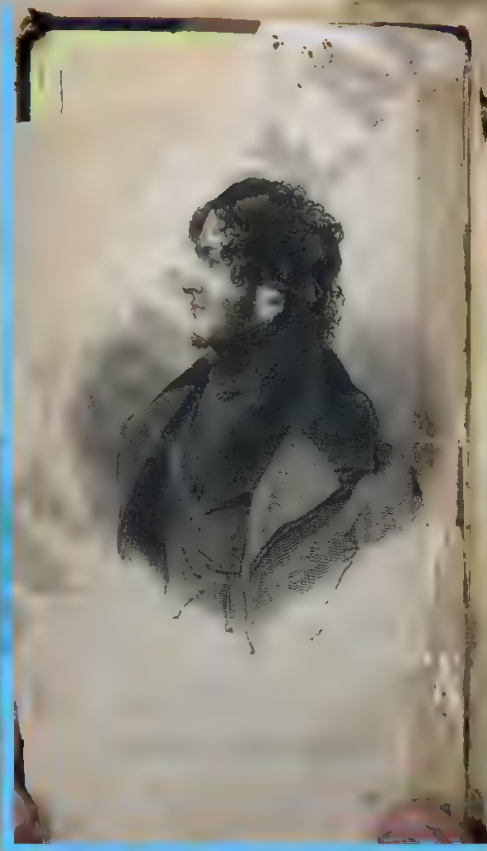
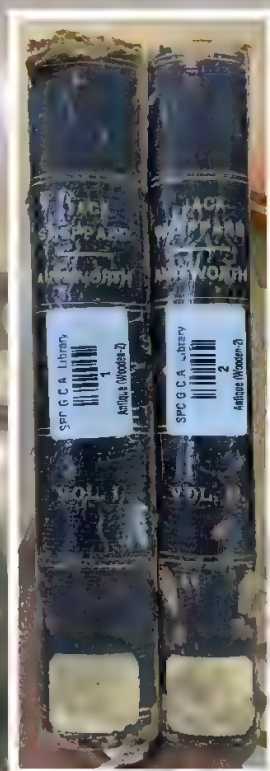


LOCATION : LIBRARY
YEAR : 1958 A.D.
SIZE : 33.9x51.9 c.m.
SPECI : WHITE STONE





वर्तमान पुस्तकालय भवन के शिलालेख की नींव रखते हुए डॉ. सी.डी. देशमुख (अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग)
Dr. C.D. Deshmukh Chairman U.G.C. lays the Foundation Stone of the New Library Block



The first book in the library of the college is the 1st & 2nd Volume of the book JACK SHEPPARD written by W.HARRISON. The first Volume of the book is of 352 pages. The second volume is of 292 pages. The book was published by Richard Bentley, New Burlington Street, London.

CONTENTS OF VOLUME - II

CELEBRATIONS[illegible][illegible]A ROMANCE.

BY W. HARRISON AINSWORTH, Esq.

Emilsky road, forest, 5500' 4' 1/2" high above water level
for 4000' to 5000' above water. Forest 1000' up to 1000'.

THE ILLUSTRATIONS BY GEORGE GEORGE-JAIN THREE VOLUMESVOL. II.

LONDON:

1458

1. *Journal of Management Education*, 2000, 24(1), 10-19.

CONTENTS OF VOLUME - II

ACKNOWLEDGMENTS

Epoch the Receipts = 1

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE HONORABLE A. J. ALLEN, JR.
STATE OF MISSISSIPPI

```
C > GPF <= 0.05
```

END AND EY 4

Sports der Tiere, 794

图 5.1-5 4.1.1 中 95% 的 TOL 值 用 1.6

[illegible]2

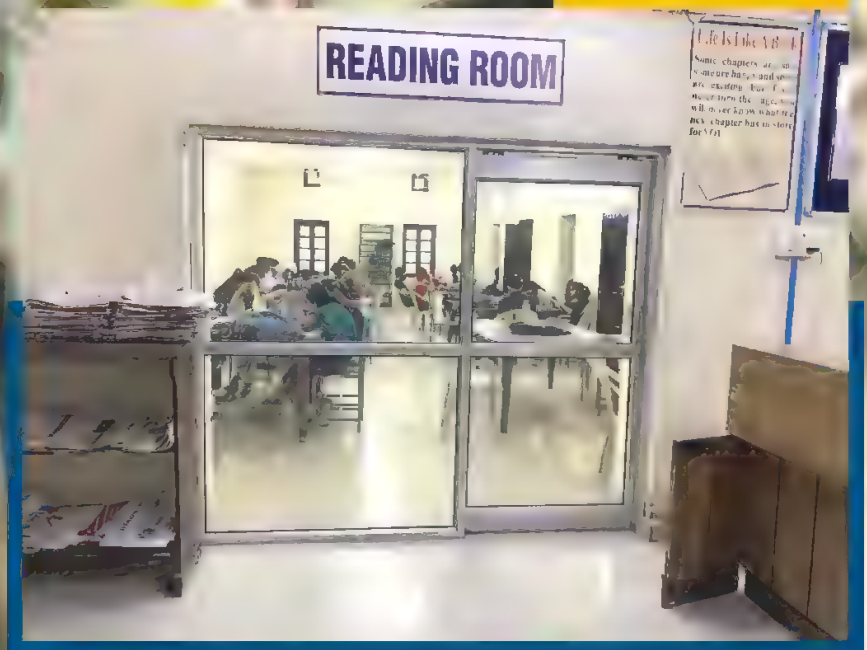
100%

LIBRARY VIEW

NON - LENDING SECTION



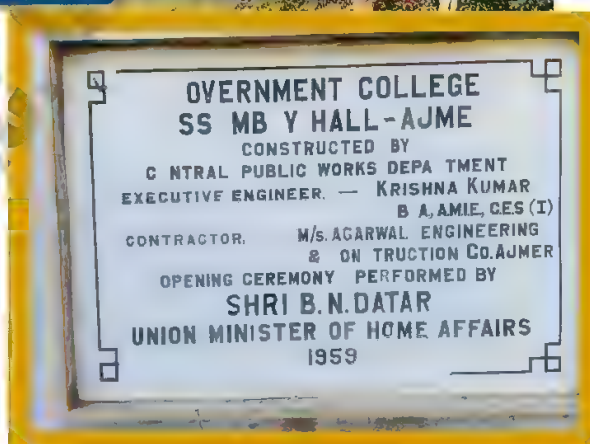
READING ROOM





राजकीय महाविद्यालय अजमेर का असेंबली परिसर जो वर्तमान समय में महाराणा प्रताप सभागार के नाम से प्रसिद्ध है। इस सभागार का निर्माण केंद्रीय लोक कार्य विभाग के इंजीनियर कृष्ण कुमार की निगरानी में एम/एस. अग्रवाल इंजीनियरिंग एंड कंस्ट्रक्शन कं. अजमेर के टेंडर में संपन्न हुआ था। इस शानदार सभागार के उद्घाटन का कार्यक्रम तत्कालीन केंद्रीय ग्रह मंत्री श्री बी.एन. दातार द्वारा वर्ष 1959 में सम्पन्न हुआ था।

वर्ष 2016 में राज्यसभा सांसद श्री भूपेंद्र यादव ने इस सभागार के जीर्णोद्धार के लिए 50 लाख रुपये अजमेर विकास प्राधिकरण को दान किये थे। श्री यादव द्वारा दिए गए इस राशि से सभागार का जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हुआ। उल्लेखनिय है कि श्री यादव इसी महाविद्यालय के पूर्व छात्र रहे हैं।



Assembly premises of Government College, Ajmer which is currently known as Maharana Pratap Auditorium.

The construction of this auditorium was completed under the contract of M.S. Agarwal Engineering and Construction Co. Ajmer, under the supervision of Engineer Krishan Kumar of the Central Public Works Department.

The programme of inauguration of this magnificent auditorium was completed in the year 1959 by the then Union Home Minister Mr. B.N. Datar.

In the year 2016, the Member of Parliament Mr. Bhupendra Yadav donated 50 lakh rupees for the renovation of this auditorium. The renovation work of the auditorium was completed with this amount given by Mr. Yadav.

It is notable that Mr. Yadav is alumni of the college.



Photo Source: College Magazines (Available in College Library)

सभागार का पुराना दृश्य ।

OLDEST VIEW OF AUDITORIUM!

LOCATION : GIRLS HOSTEL
YEAR : 1960 A.D.
SIZE : 15x10 cm.
SPEC : WHITE STONE

WOMEN HOSTEL

महाराणा प्रताप सभागार के समीप स्थित महिला छात्रावास का शिलान्यास 5 मई, 1960 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया की पत्नी ने किया था।

वर्तमान समय में महाविद्यालय के इस छात्रावास में स्नातक की छात्राएँ निवास करती हैं। इस भवन में समस्त आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध है।

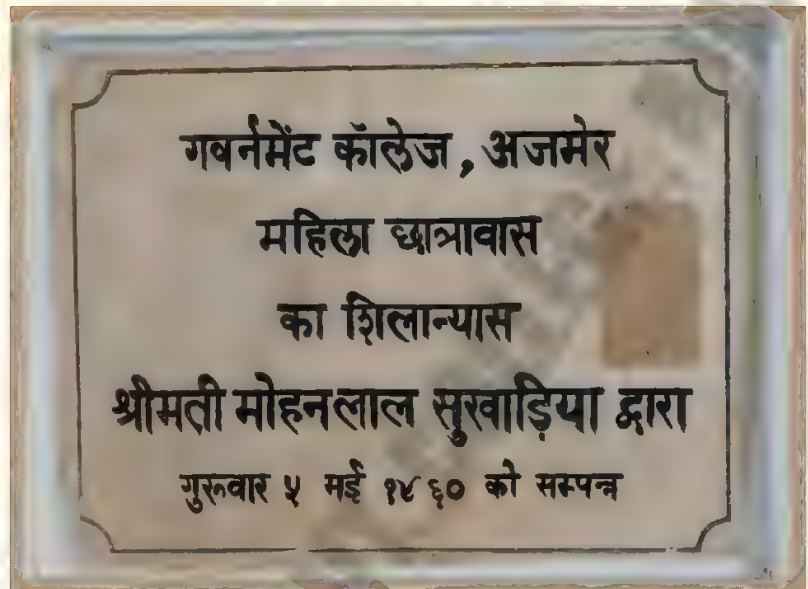


The foundation stone of the women's hostel located near the Maharana Pratap Auditorium was laid on May 5, 1960 by the Miss. Mohanlal Sukhadia.

At present, the undergraduate girls reside in this hostel of the college. All the necessary facilities are arranged in this building.

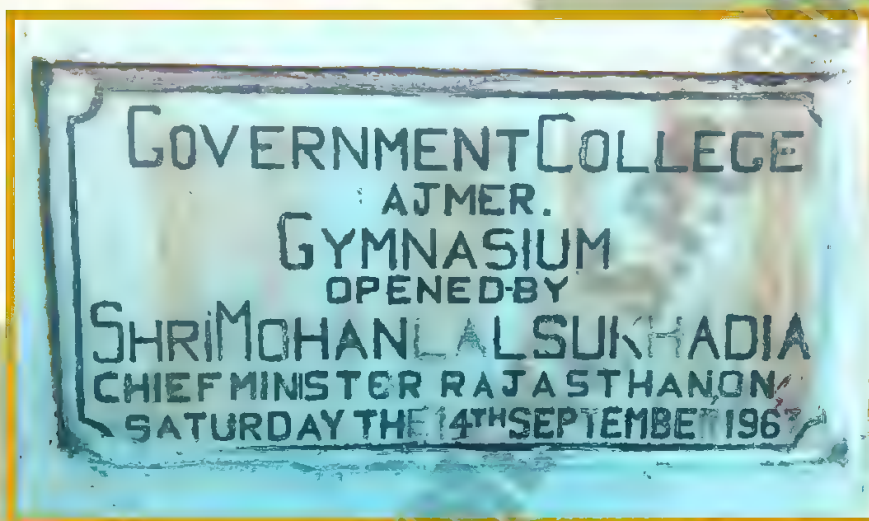


महाविद्यालय के महिला छात्रावास का शिलान्यास करती हुई श्रीमती सुखाड़िया





GYMNASIUM



LOCATION:
GYMNASIUM BUILDING
YEAR: 1963
SIZE:
SPECI.: WHITE STONE



पुराना कक्ष

श्री मोहनलाल सुखाड़िया मुख्यमंत्री, राजस्थान द्वारा शनिवार 14 सितंबर, 1963 ई. में जिमनेजियम के इस कक्ष का उद्घाटन किया गया था।

इस कक्ष से प्रवेश करने पर दायीं दिशा में एक विशाल कक्ष है। इस विशाल कक्ष में आधुनिक जिम से सम्बंधित उपकरण हैं। इस विशाल कक्ष का फर्श लकड़ी से निर्मित है तथा इस विशाल कक्ष की दिवार पर यह अभिलेख लगा हुआ है।

पुराने कक्ष से प्रवेश करने पर बायीं दिशा में एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आकर का बेडमिंटन कोर्ट है। इस बेडमिंटन कोर्ट के भवन का कुल आकार 44X 20 फुट है।



On entering from this room, there is a huge hall on the right side.

This spacious hall is equipped with modern gym equipment. The floor of this spacious room is made of wooden and this inscription is inscribed on the wall of this huge room.

On entering from the older room, there is an International size Badminton court on the left side.

The total size of this Badminton court building is 44 x 20 feet.



SCIENCE BLOCK

LOCATION : SCIENCE BLOCK
YEAR : 1995 A.D.
SIZE : 18x20 cm.
MATERIAL : WHITE STONE

मान्यवर मिट्ठालालजी मेहता
मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार के
द्वारा 13 मार्च 1995 को अनावरण

कलाम भवन में देश के सुविख्यात वैज्ञानिक सर सी.वी. रमन की प्रतिमा लगी हुई है। इस प्रतिमा में तीन अभिलेख उत्कीर्ण हैं।

ऊपर की ओर उत्कीर्ण अभिलेख में सर सी.वी. रमन द्वारा महाविद्यालय के इसी प्रांगण में उनके उद्बोधन का उल्लेख है।

वहीं नीचे के अभिलेख में इस प्रतिमा की स्थापना से संबंधित जानकारी उपलब्ध है।

There is a statue of the country's renowned scientist Sir C.V. Raman in Kalam Campus. Three inscriptions are engraved in this statue.

The inscription engraved on the top mentions his address by Sir C.V. Raman in the same premises of the college.

On the other hand, information related to the establishment of this statue is available in inscription.

राजस्थान सरकार के भूतपूर्व मुख्य सचिव मिट्ठालाल मेहता द्वारा दि. 13 मार्च, 1995 को सर सी.वी. रमन की इस प्रतिमा का अनावरण किया गया था।

7 दिसंबर, 2014 को 75 वर्ष की आयु में श्री मेहता का मुंबई के कोकिला बेन अस्पताल में देहांत हो गया था। श्री मेहता ने राजस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किये थे। वर्ष 2015 में राष्ट्रपति द्वारा श्री मेहता को मरणोपरांत पद्मश्री से सम्मानित किया गया। पद्मश्री उनकी पत्नी श्रीमती कमला मेहता द्वारा स्वीकार किया गया था।

This statue of Sir C.V. Raman was unveiled on March 13, 1995 by Mr. Mitthalal Mehta, former Chief Secretary, Government of Rajasthan.

Mr. Mehta died at Kokila Ben Hospital in Mumbai on 7 December 2014 at the age of 75. Shri Mehta had done excellent work in the field of education in Rajasthan. In 2015, Mr. Mehta was posthumously awarded the Padma Shri by the President. The Padma Shri was accepted by his wife, Mrs. Kamla Mehta.



मान्यवर मिट्ठालालजी मेहता
मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार के
द्वारा 13 मार्च 1995 को अनावरण

संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों
के सौजन्य से
13 मार्च 95 प्राचार्य

प्रतिमा के पीछे
की ओर लगा
हुआ अभिलेख।



Shri Mitthalal Mehta



सर सी.वी. रमन व उनकी पत्नी महाविद्यालय के कर्मचारियों के साथ।
Madam & Sir C.V. Raman with staff members of College.



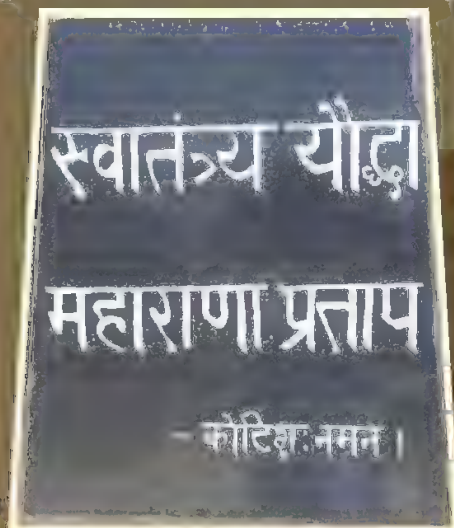
PRATAP STATUE

महाराणा प्रताप की प्रतिमा के 5.8 फुट ऊँचे इस अष्टकोणीय प्लेटफार्म की दिवार पर मध्य में 8 समान आकार के पत्थर लगे हुए हैं। जिनमें से 5 पत्थरों पर निम्न अभिलेख उत्कीर्ण है।

The 5.8 feet high octagonal platform wall of Maharana Pratap's statue has 8 equally sized stones fixed in the middle. Out of which the following inscription is engraved on 5 stones.

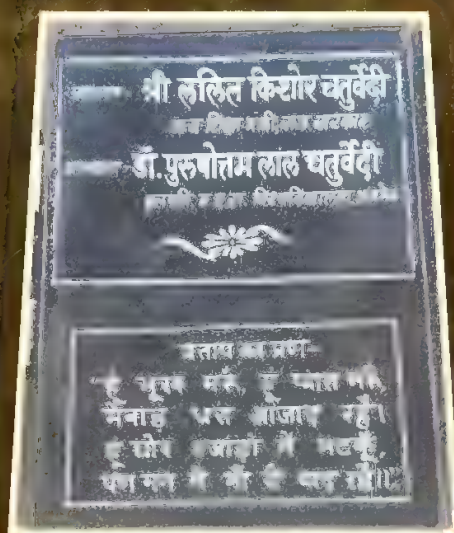
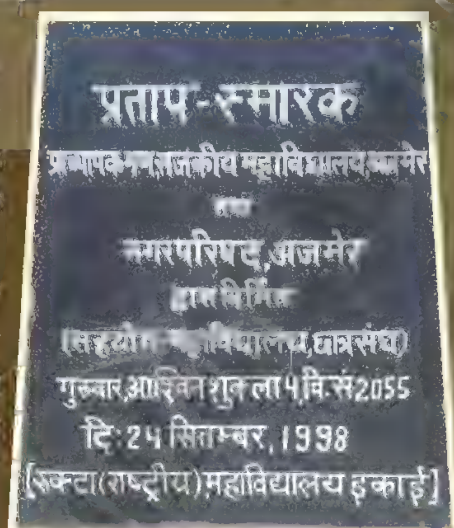
राजस्थान का वह राजा, जिनको राज्य बपौती में नहीं मिला बल्कि जनता के द्वारा दिया गया था। यह राजतंत्र में लोकतंत्र की स्थापना थी। कोई राजा किस कदर अपनी जनता में लोकप्रिय रहा होगा, राजतिलक के समय जनता अपने पूर्व राजा की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए जगमाल को हटाकर महाराणा प्रताप को राजा बना देती है। प्रताप बहुत बड़े संगठन निर्माता थे, प्रताप ने मुगलों के विरुद्ध एक अच्छी सेना खड़ी कर दी थी। जिसमें इनके साथ अफगानी सरदार हकीम खां सूरी अपनी सेना लेकर प्रताप की तरफ से लड़ने के लिये आए, इनके साथ भीलों की सेना लेकर राणा पुंजा भी मैदान में लड़ने आते हैं। ये सब चीजें बताती हैं कि प्रताप में मुगलविरोधी गठबंधन बनाने की पूरी संभावना थी। मेवाड़ की जनता महाराणा प्रताप के साथ इतने दिल से जुड़ गई थी कि उस जनता ने ये कहना शुरू कर दिया था कि “राणा जी कहवे बटे उदयपुर”



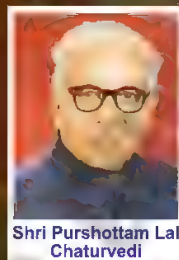


24 दिसंबर, 1998 को
महाविद्यालय के शिक्षकों, छात्रसंघ
तथा नगर परिषद, अजमेर के संयुक्त
सहयोग से महाराणा प्रताप की
प्रतिमा का निर्माण सम्पन्न हुआ।

इस प्रतिमा का अनावरण
तत्कालीन शिक्षा राज्यमंत्री श्री
ललित किशोर चतुर्वेदी के द्वारा
किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम की
अध्यक्षता म.द.स. विश्वविद्यालय के
तत्कालीन कुलपति श्री
पुरषोत्तमलाल चतुर्वेदी ने की।

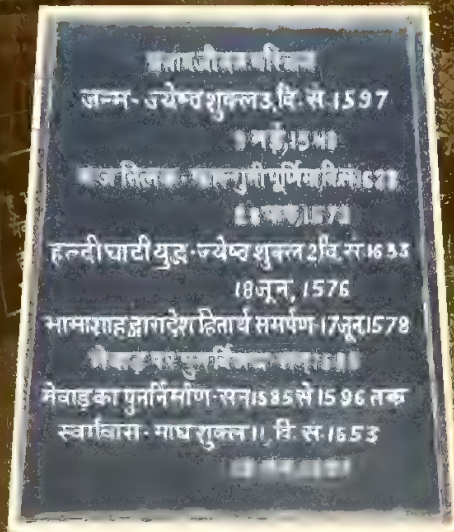
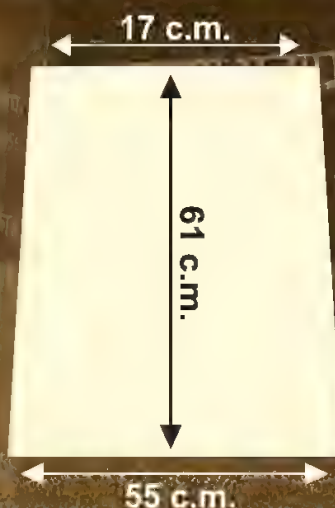
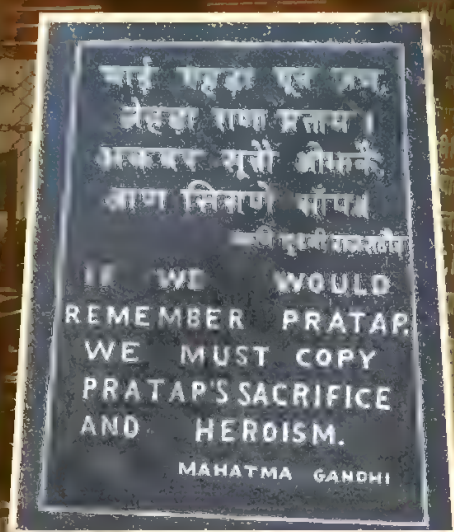


Shri Lalit Kishore
Chaturvedi



Shri Purshottam Lal
Chaturvedi

On December 24, 1998, the
inauguration of the statue of
Maharana Pratap was done
with the joint collaboration
of the staff members of the
college, the student union
and the city council, Ajmer.
This statue was unveiled by
the then Minister of State for
Education Shri Lalit Kishore
Chaturvedi. The inaugural
programme was presided over by the
then Vice-Chancellor of M.D.S.
University, Mr.
Purushottamlal Chaturvedi.



MAIN STADIUM

महाविद्यालय के इस खेल परिसर का उद्घाटन 21 सितंबर, 2005 को किया गया था। सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास निधि योजनान्तर्गत क्रीड़ा मंडप व दर्शक दीर्घा का निर्माण 7 लाख रुपये की स्वीकृत राशि से सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन समारोह में लोकार्पणकर्ता के रूप में प्रो. रासासिंह रावत सांसद, अजमेर, मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री तथा अध्यक्ष के रूप में अजमेर नगर परिषद के सभापति श्री धर्मेन्द्र गहलोत उपस्थित थे।

उद्घाटन कार्यक्रम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. सी.बी. गैना के कार्यकाल में सम्पन्न हुआ था।

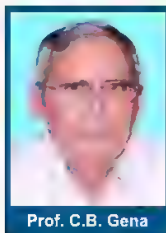
वर्तमान समय में इस महाविद्यालय परिसर में खेल गतिविधियों के साथ साथ गणतंत्र दिवस व स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर महाविद्यालय के आधिकारिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। यह खेल परिसर 200 मीटर दौड़ के लिए उपयुक्त है।

This sports complex of the college was inaugurated on 21 September, 2005. Under the Member of Parliament Local Area Development Fund scheme, the construction of sports pavilion and audience gallery was completed with an approved amount of Rs.7 lakh.

In the inauguration ceremony, Prof. Rasa Singh Rawat Member of Parliament Ajmer, Prof. Vasudev Devnani State Education Minister as Chief Guest and Chairman of Ajmer Municipal Council Dharmendra Gehlot were present as the inaugurating function.

The inaugural programme was completed during the tenure of the Principal of the College Dr. C.B. Gaina.

At present, along with sports activities in this college sports campus, official programmes of the college are organized on the auspicious occasion of Republic Day and Independence Day. This sports complex is equipped with 200 meter racing track.



Prof. C.B. Gena

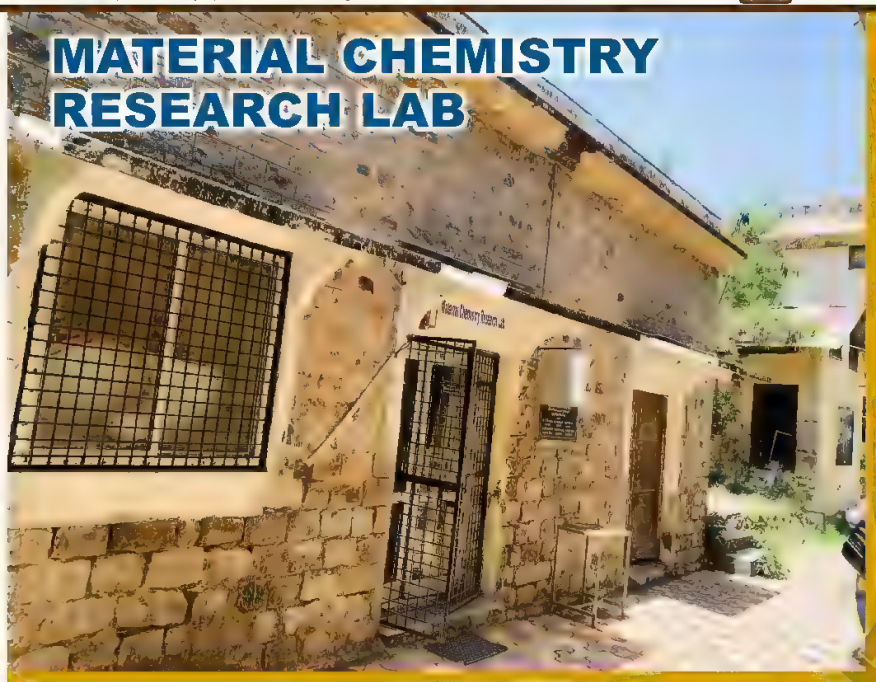


Prof. Rasa Singh Rawat

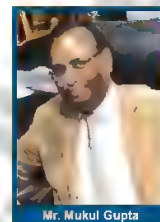
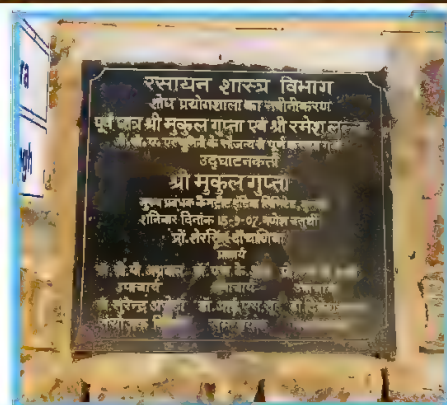


LOCATION : STADIUM
YEAR : 2005 A.D.
SIZE : 64.31x60.96 c.m.
SPECI : BLACK STONE





MATERIAL CHEMISTRY RESEARCH LAB



Mr. Mukul Gupta



Mr. Ramesh Lulla



Prof. S.S. Dauchania

रसायन शास्त्र विभाग के पूर्व छात्र श्री मुकुल गुप्ता एवं श्री रमेश लुल्ला, महाविद्यालय एल्युमिनी के आपसी सहयोग से इस विभाग के लिए शोध प्रयोगशाला के नवीनीकरण हेतु इस भवन का जीर्णोद्धार किया गया।

इस नवीन शोध प्रयोगशाला का उद्घाटन शनिवार 15 सितंबर, 2007 को श्री मुकुल गुप्ता (मुख्य प्रबंधक कैमट्रीट इण्डिया लिमिटेड, मुंबई) द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. शेरसिंह दौचाणीया की विशेष उपस्थिति रही। साथ ही उपाचार्य डॉ.डी.पी. अग्रवाल, डॉ.एस.के.शाह, प्रो.एस.बी. शर्मा भी उपस्थित थे।

विभाग संयोजक डॉ. सुरेंद्र अरोड़ा, समन्वयक डॉ.आई.एस.सूद तथा विभागाध्यक्ष डॉ. दिनेश गुप्ता भी उपस्थित थे।

LOCATION: MATERIAL CHEMISTRY
RESEARCH LAB
YEAR: 2005 A.D.
SIZE: 26.8x24 c.m.
SPECI.: BLACK STONE

The mutual cooperation of Mr. Mukul Gupta and Mr. Ramesh Lulla, former students of the Department of Chemistry led to renovation of this building into research laboratory.

This innovative research laboratory was inaugurated on Saturday 15th September, 2007 by Mr. Mukul Gupta (Chief Manager, Chemtreat India Ltd., Mumbai).

Principal Prof. Shersingh Dauchania had a special presence in this programme. Along with this, Vice Chancellor Dr. D.P. Aggarwal, Dr. S.K. Shah, Prof. S.B. Sharma were also present.

Dr. Surendra Arora Department Coordinator, Dr. I.S. Sood Coordinator and Dr. Dinesh Gupta Head of Department were also present.





COLLEGE ENTRANCE GATE - 1

ब्यावर रोड की ओर राजकीय महाविद्यालय का यह द्वार नजर आता है। वर्तमान समय में इस द्वार को डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वार के नाम से जाना जाता है। इस द्वार के शीर्ष पर भी एक चिन्ह है जिसके नीचे विद्या ज्योति परम् लिखा है तथा अंग्रेजी में **GCA** लिखा है और इनके नीचे **ESTD. 1836** लिखा है।

इस द्वार से प्रवेश करते ही बाएं दिशा में महाविद्यालय का नवीनतम आधुनिक नेहरू भवन स्थापित है। यहाँ विद्यार्थियों के लिए पार्किंग सुविधा की व्यवस्था है तथा बायीं दिशा में खेल परिसर है, सामने की ओर महाराणा प्रताप की प्रतिमा तथा सभागार स्थित है।

This gate of Government College is visible from Beawar Road. At present, this gate is known as **Dr. Bhimrao Ambedkar Gate**. At the top of this gate our college emblem is embedded which mentions **Vidya Jyoti Param** is written, and **GCA** is written in English and below these **ESTD. 1836** is written.

On entering from this gate, there **Nehru Bhavan** & Commerce Department of the college is established on the left side. There is a parking facility for the students on the left side is sports complex. On the front side of **Maharana Pratap** statue and the auditorium.



LOCATION : STADIUM WALL
YEAR : 2008 A.D.
SIZE : 152.4x76.2 c.m.
SPECI. : BLACK STONE



Prof. Vasudev Devnani



Shri Dharmesh Jain



Shri Onkar Singh Lakhawat



Smt. Anita Bhadel



नगर सुधार न्यास, अजमेर के सहयोग से राजकीय महाविद्यालय अजमेर के मुख्य द्वारों का शिलान्यास समारोह **रविवार 14 फरवरी, 2008** को आयोजित किया गया था। इस शिलान्यास समारोह में प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार व श्री धर्मेश जैन अध्यक्ष, नगर सुधार न्यास अजमेर की विशेष उपस्थिति थी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री ओंकार सिंह लखावत प्रो. ध. पा. उपस्थित थे। श्रीमती अनीता भदेल विधायक, अजमेर पूर्व कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित हुई थी। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रासा सिंह रावत सांसद, अजमेर, श्री धर्मेन्द्र गहलोत सभापति-नगर परिषद, अजमेर, श्री श्रीकिशन सोनगरा प्रदेश महामंत्री, भाजपा तथा श्री शिव शंकर हेड़ा शहर जिला अध्यक्ष, भाजपा भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में न्यासीगण के रूप में श्री प्रियशील हाडा, डॉ. कमला गोसर, श्री कन्हैया लाल सोनी, श्री अरविन्द यादव, श्री अरविन्द शर्मा, श्री यशोदा नंदन चौहान, श्री संजय खंडेलवाल, श्री सम्पत सांखला, श्री सुरेंद्र गोयल, श्रीमती कुसुम शर्मा, श्री अजय वर्मा, डॉ. सुभाष माहेश्वरी, श्री शफी मोहम्मद घोसी व श्री वीरेंद्र बहल उपस्थित हुए थे।

The foundation stone laying ceremony of the main gates of Government College Ajmer was organized on Sunday, **February 14, 2008** in collaboration with the Nagar Sudhar Nyas, Ajmer. Prof. Vasudev Devnani Minister of State for Education, Government of Rajasthan and Mr. Dharmesh Jain Chairman, City Improvement Trust, Ajmer had a special presence in this foundation stone laying ceremony. Mr. Onkar Singh Lakhawat was present as the chief guest in the programme. Smt. Anita Bhadel MLA, Ajmer East was present as the President of the programme. Mr. Rasa Singh Rawat Member of Parliament, Ajmer, Mr. Dharmendra Gehlot Chairman – Municipal Council, Ajmer, Mr. Shrikishan Sonagara State General Secretary, BJP and Mr. Shiv Shankar Heda City District President, BJP were also present as special guests.

Mr. Priyasheel Hada, Dr. Kamla Gosar, Mr. Kanhaiya Lal Soni, Mr. Arvind Yadav, Mr. Arvind Sharma, Mr. Yashoda Nandan Chauhan, Mr. Sanjay Khandelwal, Mr. Sampat Sankhla, Mr. Surendra Goyal, Mrs. Kusum Sharma, Mr. Ajay as trustees in the program. Verma, Dr. Subhash Maheshwari, Mr. Shafi Mohammad Ghosi and Mr. Virendra Behl were present.

COLLEGE ENTRANCE GATE - 2

केसर गंज की ओर से बढ़ने पर राजकीय महाविद्यालय का यह द्वार नजर आता है। वर्तमान समय में इस द्वार को **महाराजा सूरजमल द्वार** के नाम से जाना जाता है।

इस द्वार के शीर्ष पर एक चिन्ह तथा अंग्रेजी में **GCA** लिखा है और इनके नीचे **ESTD. 1836** लिखा है। यह सभी शब्द लोह धातु पर लिखकर उसकी काटकर द्वार पर चिपकाये हुए प्रतीत होते हैं। संभवतः यह दोनों शब्द और ज्ञान ज्योति का चिन्ह बाद में इस द्वार पर चिपकाये हुए प्रतीत होते हैं।

इस द्वार से प्रवेश करने पर दाहिने दिशा में विद्यार्थियों के लिए एक विशाल पार्किंग सुविधा की व्यवस्था है। आगे चलकर एक लघु द्वार आता है। इस द्वार के अंदर एक स्टाफ पार्किंग सुविधा है। इसके आगे तीसरा द्वार आता है। इस द्वार के अंदर प्रवेश करते ही छात्रसंघ कार्यालय स्थित है।

This Gate of Government College is visible while coming from Kesar Ganj. At present, this gate is known as Maharaja Surajmal Gate.

On the top of this door, there is a Emblem and **GCA** written in English and below that **ESTD. 1836** is written. All these words seem to have been written on iron metal and pasted on the door by cutting it. Probably both these words and the symbol of Gyan Jyoti seem to have been pasted on this door later.

As soon as we enter through this gate, there is a huge parking facility for the students on the right side. A small gate comes ahead. There is also a parking facility for staff inside this gate. Next to this comes the third gate. The student union office is located as soon as we enter inside this gate.





Prof. Vasudev Devnani



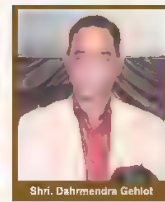
Shri Rasa Singh Rawat



Shri Onkar Singh Lakhawat

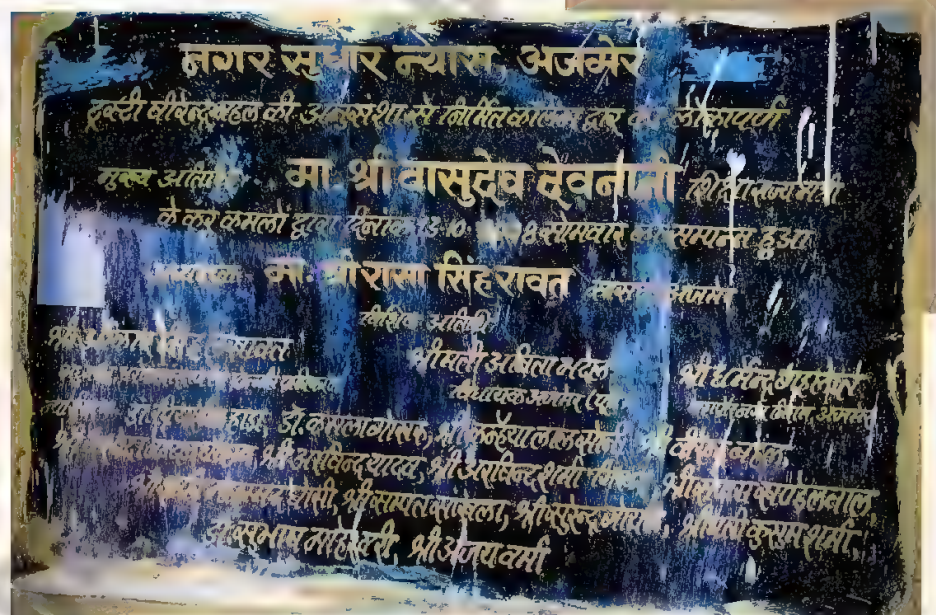


Smt. Anita Bhadel



Shri. Dharmendra Gehlot

नगर सुधार न्यास, अजमेर ट्रस्टी वीरेन्द्र बहल की अनुसंशा से निर्मित महाविद्यालय द्वार का लोकार्पण समारोह **सोमवार 13 अक्टूबर, 2008** को आयोजित किया गया था। इस लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार तथा अध्यक्ष के रूप में श्री रासा सिंह रावत सांसद, अजमेर उपस्थित थे। श्री ओंकार सिंह लखावत अध्यक्ष धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण, श्रीमती अनीता भदेल विधायक, अजमेर पूर्व, धर्मेन्द्र गहलोत सभापति-नगर परिषद, अजमेर भी उपस्थित थे।



कार्यक्रम में न्यासीगण के रूप में श्री

प्रियशील हाडा, डॉ. कमला गोसर, श्री कन्हैया लाल सोनी, श्री वीरेन्द्र बहल, श्री यशोदा नंदन चौहान, श्री अरविन्द यादव, श्री अरविन्द शर्मा गिरधर, श्री संजय खंडेलवाल, श्री शफी मोहम्मद घोसी, श्री सम्पत सांखला, श्री सुरेंद्र गोयल, श्रीमती कुसुम शर्मा, डॉ. सुभाष माहेश्वरी व श्री अजय वर्मा उपस्थित हुए थे।

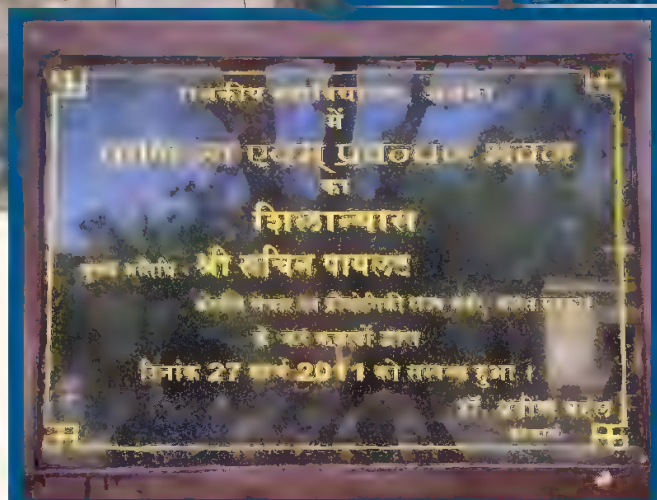
The inauguration ceremony of the college gate built on the recommendation of the Nagar Sudhar Nyas, Ajmer Trustee Virendra Behl was held on **Monday, October 13, 2008**. In this inauguration ceremony Prof. Vasudev Devnani Minister of State for Education, Government of Rajasthan and Mr. Rasa Singh Rawat Member of Parliament, Ajmer were present as the chief guest. Mr. Onkar Singh Lakhawat Chairman Heritage Conservation and Promotion Authority, Mrs. Anita Bhadel M.L.A., Ajmer East, Dharmendra Gehlot Chairman - Municipal Council, Ajmer were also present.

Mr. Priyasheel Hada, Dr. Kamla Gosar, Mr. Kanhaiya Lal Soni, Mr. Virendra Behl, Mr. Yashoda Nandan Chauhan, Mr. Arvind Yadav, Mr. Arvind Sharma Girdhar, Mr. Sanjay Khandelwal, Mr. Shafi Mohammad Ghosi, Mr. Sampat Sankhla, as trustees in the program. Mr. Surendra Goyal, Mrs. Kusum Sharma, Dr. Subhash Maheshwari and Mr. Ajay Verma were present.

COMMERCE BLOCK



LOCATION NEHRU CAMPUS
YEAR 2006 A.D.
SIZE 64.31x50 ft.
SPEC. BLACK STONE



महाविद्यालय के वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग के भवन का शिलान्यास श्री सचिन पायलट (केंद्रीय संचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्री) द्वारा 27 मार्च, 2011 में किया गया था।

इस भवन के भू-तल में महाविद्यालय के प्रबंधन कार्य किये जाते हैं तथा छात्रों एवं शिक्षकों की सुविधा के लिए SBI बैंक का मिनी ब्रांच भी संचालित है। इसके प्रथम तल में वाणिज्य संकाय की कक्षाएं संचालित की जाती हैं।

नेहरु भवन सम्पूर्ण महाविद्यालय के आधुनिक भवनों में से एक है। जिसे आधुनिक निर्माण शैली में निर्मित किया गया है।

The foundation stone of the College's Commerce and Management Building was laid by Sachin Pilot (Union Minister of Communications and Technology) on March 27, 2011.

At the ground floor of this building, the management work of the college is done and for the convenience of students and teachers a MINI Branch of SBI Bank is also operated. Classes of commerce subjects are conducted in the floor above it.

Nehru Bhawan is one of the modern buildings of the entire college. Which has been built in the modern construction style.

COMMERCE BLOCK

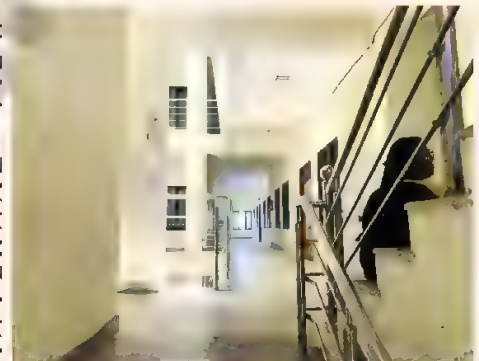
MAIN ENTRANCE GATE



ACADEMIC BRANCH



INTERNAL - VIEW



INTERNAL - VIEW



SBI MINI BRANCH





ADMINISTRATIVE BLOCK

LOCATION : NEAR AUDITORIUM
YEAR : 2008 A.D.
SIZE : 29x26 inch
SPECI. : BLACK STONE

राजकीय महाविद्यालय अजमेर के छात्र निधि कोष से नवनिर्मित प्रशासनिक भवन का लोकार्पण माननीय प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा दि. 12 अप्रैल, 2008 को सम्पन्न हुआ।

लोकार्पण कार्यक्रम में प्राचार्य शेरसिंह दौचाणिया, उपाचार्य डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, एस.के. बंसल तथा श्री के.एस. शाह भी उपस्थित थे।

यह अभिलेख वर्तमान समय में महाराणा प्रताप सभागार के पास स्थित वर्तमान NCC भवन की दिवार के सहारे रखा हुआ है।

Inauguration of the newly constructed administrative building from the Student Fund of Government College, Ajmer by Honorable Prof. Vasudev Devnani Minister of State for Education, Government of Rajasthan Completed on **12 April 2008**.

In the inauguration programme, Principal Shersingh Dauchania, Vice-Principal Dr. Durgaprasad Agrawal, S.K. Bansal and Shri K.S. Shah were also present.

At present, this inscription is placed near the wall of current NCC Building near Maharana Pratap Auditorium.



Prof. Vasudev Devnani



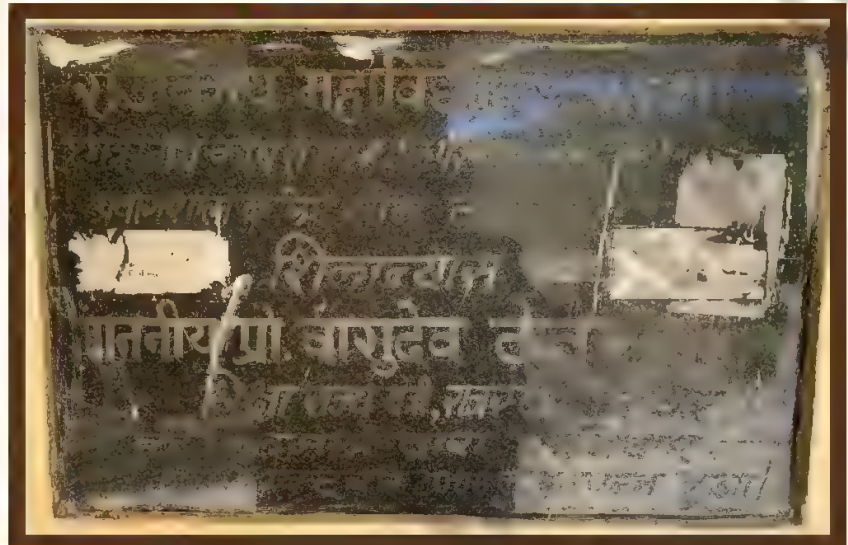
Prof. S.S. Dauchania



LOCATION : U.G.C. BLOCK
YEAR : 2008 A.D.
SIZE : 33.5x22 inch
SPECI. : BLACK STONE

U.G.C. BLOCK

प्राणीशास्त्र विभाग के पीछे स्थित भवन में महाविद्यालय के छात्र निधि कोष से भू-तल पर रसायन शास्त्र प्रयोगशाला के लिए 3 कक्षों का शिलान्यास प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार के द्वारा सोमवार दि. 13 अक्टूबर, 2008 को सम्पन्न हुआ।



Prof. Vasudev Devnani

In the building located behind the Department of Zoology, the foundation stone of 3 rooms for the chemistry laboratory on the ground floor was inaugurated by Prof. Vasudev Devnani Minister of State for Education, Government of Rajasthan on Monday, October 13, 2008 from the Boys Fund of the college.



MATHEMATICS DEPARTMENT



LOCATION : MATHS DEPT.
YEAR : 2008 A.D.
SIZE : 10x50 c.m.
SPECI : BLACK STONE



Prof. Vasudev Devnani

पी.जी. भवन से आगे बढ़कर मंदिर के समीप महाविद्यालय के छात्र निधि कोष से गणित विभाग के लिए कंप्यूटर प्रयोगशाला व कक्षा का शिलान्यास प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार के द्वारा सोमवार दि. **13 अक्टूबर, 2008** को सम्पन्न हुआ।

Proceeding from the P.G. Block near the temple, the foundation stone of the computer laboratory and room for the mathematics department was inaugurated on **Monday, October 13, 2008** by Prof. Vasudev Devnani Minister of State for Education, Government of Rajasthan from the Boys Fund of the college.





GYMNASIUM EXTERIOR CAMPUS

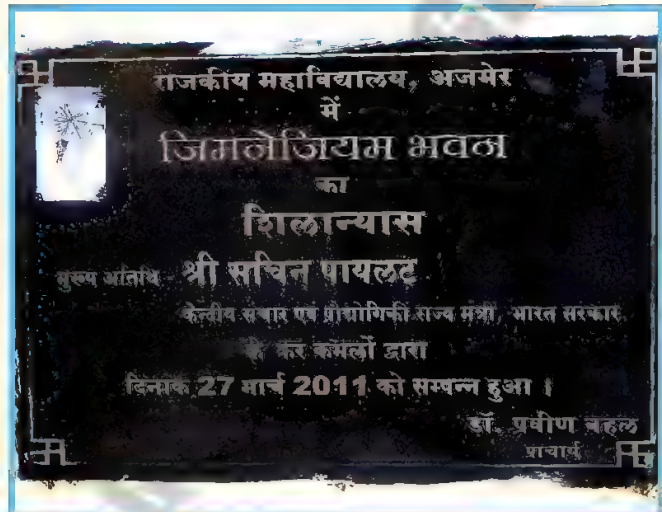
महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों व कर्मचारियों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए एक जिमनेजियम भवन की शुरुआत की गयी।

इस जिमनेजियम भवन में विभिन्न प्रकार की व्यायाम से संबंधित उपकरण उपलब्ध हैं। जिमनेजियम भवन का शिलान्यास श्री सचिन पायलट केंद्रीय संचार एवं प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री, भारत सरकार द्वारा **27 मार्च, 2011** प्राचार्य प्रवीण बहल के कार्यकाल में किया गया था।

Keeping in mind the health of the Students, Teachers and Employees of the college, a Gymnasium Building was inaugurated.

Different types of exercise related equipment are available in this Gymnasium building. The foundation stone of the Gymnasium building was laid by Sachin Pilot Union Minister of State for Communications and Technology, Government of India ON **March 27, 2011** during the tenure of Principal Praveen Behl.

LOCATION : GYMNASIUM CAMPUS
YEAR : 2011 A.D.
SIZE : 46x41 c.m.
SPECI : BLACK STONE





GYMNASIUM INTERIOR CAMPUS



सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के जिमनेजियम भवन का लोकार्पण **14 जुलाई, 2016** को प्रो. वासुदेव देवनानी शिक्षा राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार, जयपुर के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ था।

इस लोकार्पण कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री धर्मेन्द्र गहलोत महापौर, नगर निगम अजमेर तथा श्री शिवशंकर हेड़ा अध्यक्ष अजमेर विकास प्राधिकरण अजमेर भी उपस्थित थे।

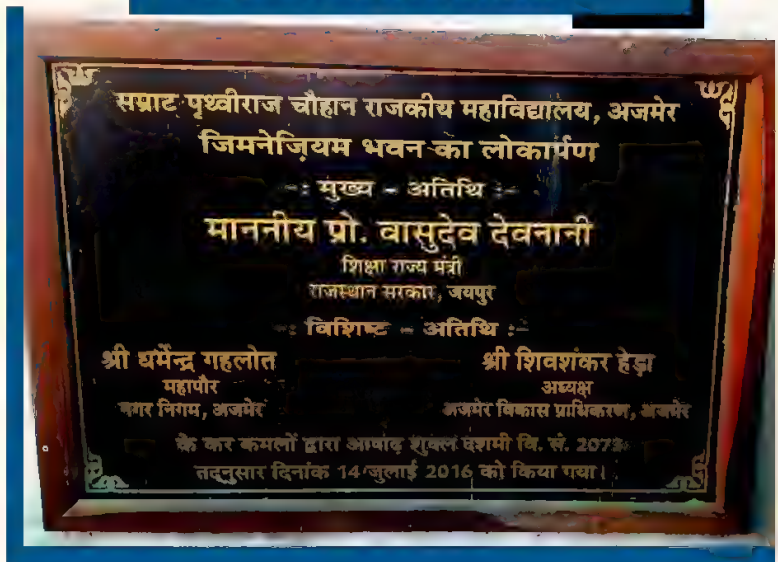


The inauguration of the Gymnasium building of Samrat Prithviraj Chauhan Government College, Ajmer was done on **July 14, 2016** in the chief hospitality of Prof. Vasudev Devnani Minister of State for Education, Government of Rajasthan, Jaipur.

Mr. Dharmendra Gehlot Mayor, Municipal Corporation Ajmer and Mr. Shivshankar Heda Chairman, Ajmer Development Authority, Ajmer were also present in this inauguration programme as special guests.



LOCATION : GYMNASIUM BUILDING
YEAR : 2016 A.D.
SIZE : 34.6x22.2 c.m.
SPECI. : BLACK STONE





Smt. Vasundhara Raje



Shri Prakash Javdekar



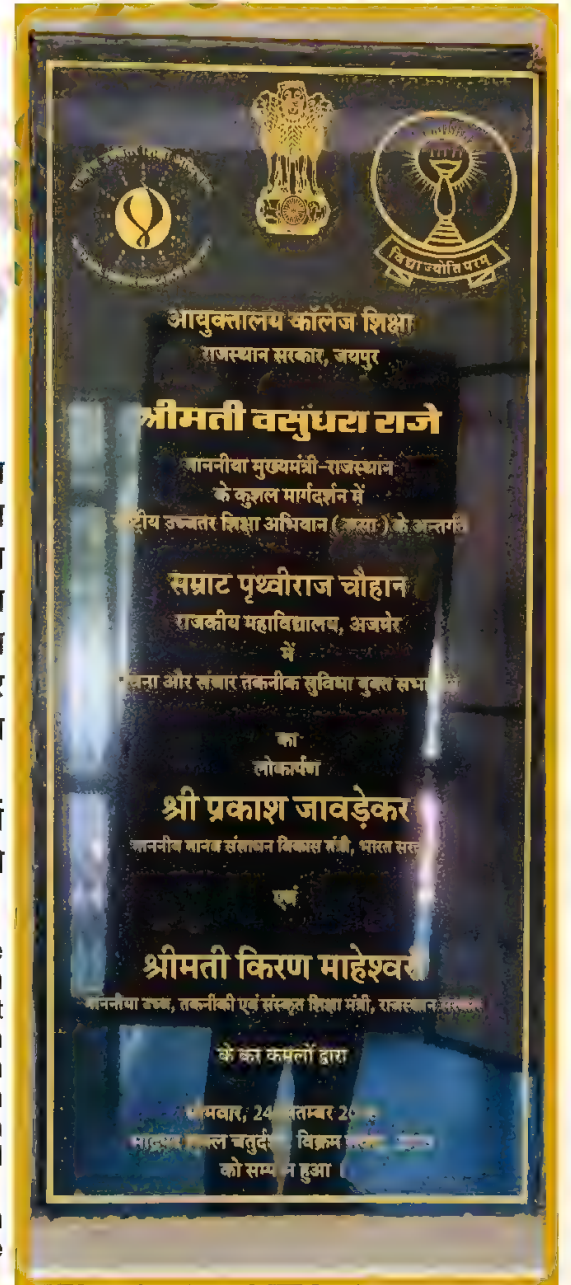
Smt. Kiran Maheshwari

श्रीमती वसुंधरा राजे मुख्यमंत्री, राजस्थान के कुशल मार्गदर्शन में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय में सूचना और संचार तकनीक सुविधा युक्त सभा कक्ष का लोकार्पण श्री प्रकाश जावड़ेकर मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार एवं श्रीमती किरण माहेश्वरी उच्च तकनीकी एवं संस्कृत शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार के कर कमलों द्वारा **सोमवार 24 सितंबर, 2018** को इस सभागार का लोकार्पण हुआ।

यह सभागार आधुनिक निर्माण शैली से निर्मित है, जिसमें महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रम व सेमिनार आयोजित किये जाते हैं।

Shri Prakash Javadekar Minister of Human Resource Development, Government of India and Mrs. Kiran Maheshwari Minister of Higher Education and Sanskrit Education Rajasthan inaugurated the assembly hall with information and communication technology facility in the college, under the National Higher education campaign, under the guidance of Chief Minister, Rajasthan Mrs. Vasundhara Raje. This auditorium was inaugurated on **Monday, September 24, 2018**.

This auditorium is made of modern construction style, in which various programmes and seminars of the college are organized.



GEOGRAPHY DEPARTMENT



Shri Bhupendra Yadav

LOCATION: GEOGRAPHY DEPT
YEAR: 2019 A.U.
SIZE: 43x45 inch
SPE: WALL PAINT

सूचना पट्ट
माननीय सांसद (राज्य सभा) महोदय का नाम:-
श्री भूपेन्द्र यादव
योजना का नाम:- सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास
कार्य का नाम:- समूह प्रथी राज राजकीय
महाविद्यालय अजमेर में भूगोल प्रयोगशाला
हेतु कुल व बरामदा निर्माण
चीकट राशि:- 15.00 लाख
व्यय राशि:- 14,61,459.00 रु.
कार्य प्रारम्भ दिनांक:- 21-7-2018
कार्य पूर्ण दिनांक:- 20-1-2019 (20-12-18)
कार्यकारी एजेंसी:- अजमेर विकास
प्रधिकरण, अजमेर

महाविद्यालय के भूगोल विभाग में माननीय सांसद राज्यसभा श्री भूपेन्द्र यादव के आर्थिक सहयोग से विद्यार्थियों के लिए हॉल का निर्माण कार्य 21 जुलाई 2018 को प्रारम्भ हुआ जो 20 जनवरी 2019 को संपन्न हुआ। इस कार्य में कुल 14,61,459 रूपयों का व्यय हुआ।

The construction work of hall for students in the Geography Department of the college by financial contribution of Shri Bhupendra Yadav Member of Parliament started on July 21, 2018, which was completed on January 20, 2019. A total of Rs 14,61,459 was spent on this work.

महाविद्यालय के भूगोल विभाग में स्नातक पाठ्यक्रम की शुरुआत वर्ष 1959 ई. में हुई थी। वर्ष 1979 में विभाग में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। महाविद्यालय के भूगोल विभाग में स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों के लिए रिमोट सेंसिंग एंड जी.आई.एस. नामक पेपर का प्रबंध है। यह पेपर प्रदेश स्तर पर सिर्फ हमारे महाविद्यालय के भूगोल विभाग में ही पढ़ाया जाता है। भूगोल विभाग के प्रथम विभागाध्यक्ष श्री के.के. शर्मा थे।

वर्तमान समय में भूगोल विभाग अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित विभागों में से एक है। इस विभाग में विद्यार्थियों को भूगोल के जटिल विषयों को स्मार्ट बोर्ड पर एनीमेशन के माध्यम से सरलता से समझाया जाता है।

The U.G. in the Geography Department of the college was started in the year 1959. In the year 1979, P.G. Course was started in the department. In the Geography Department of the college, there is a provision for a paper named Remote Sensing and GIS for the P.G. students. This paper is taught at the university level only in the Geography Department of our college. The first Head of Department of Geography was Shri K.K. Sharma.

At present, the Department of Geography is one of the departments equipped with modern facilities. In this department, complex topics of geography are explained to the students easily through animation on the smart board.



SMART CLASS



SEMINAR ROOM

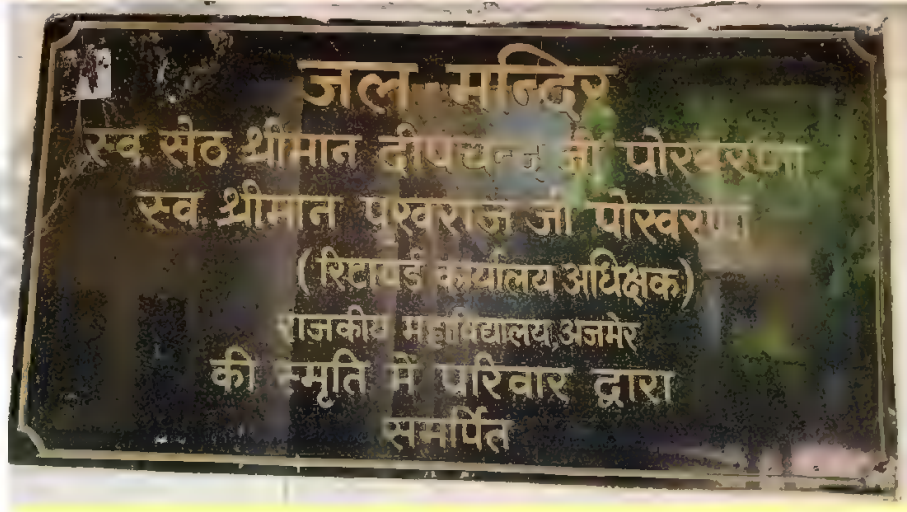


GLT

ARTS BLOCK



महाविद्यालय का आर्ट्स ब्लॉक वर्तमान में लाल बहादुर शास्त्री भवन के नाम से जाना जाता है जिसमें जल सुविधा के लिए स्वर्गीय श्री दीपचंद जी पोखरणा व स्वर्गीय श्री पुखराज जी पोखरणा (रिटायर्ड कार्यालय अधीक्षक, राजकीय महाविद्यालय अजमेर) की स्मृति में उनके परिवारजनों द्वारा यह जल मन्दिर बनवाया गया था।



This Water Hut was built by the family members of Late Shri Deepchand Pokharna and Late Shri Pukhraj Pokharna (Retired Office Superintendent, Government College Ajmer) for water facility in Arts Block of the college currently known as Lal Bahadur Shastri Bhavan.

LOCATION : ARTS BLOCK
SIZE : 21.2x47.5 inch
SPEC : BLACK STONE

OLD BOYS HOSTEL



महाविद्यालय पत्रिका से प्राप्त फोटो के अनुसार श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने छात्र छात्रावास के नींव का शिलान्यास किया था। चूँकि यह अभिलेख महाविद्यालय में स्थित छात्रावास में बहुत दूढ़ने पर भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ इसलिए प्रबल सम्भवना है कि उक्त शिलान्यास कार्यक्रम महिला छात्रावास के शिलान्यास कार्यक्रम के साथ दिनांक 5 मई 1960 ई. को सम्पन्न हुआ होगा। क्योंकि महिला छात्रावास के प्रमाण स्पष्ट रूप से अभिलेख तथा महाविद्यालय के मैगजीन में फोटो के रूप में भी देखा जा सकता है।

According to the photo obtained from the Government College, Ajmer magazine, Mr. Mohanlal Sukhadia had laid the foundation stone of the Boys Student Hostel. Since this inscription was not visible in the hostel located in the college even after searching a lot, there is a strong possibility that the foundation stone laying programme would have been completed on May 5, 1960 along with the foundation stone laying programme of the women's hostel. Because the evidence of women's hostel can be clearly seen in the form of Inscription in the same magazine.



EPILOGUE

This book is a guide to our campus's inscriptions, buildings, statues, and forgotten days. We tried to put forward a collective effort of our college's ancestors who served here as principals, professors, supporting staff and students. While working on this book we came across innumerable such staff members and students who put their blood and sweat to enrich the roots of this antique and pioneer institution of education in North India, if these roots were not sown properly then we couldn't have this *Bodhi Tree* whose ripe fruits are intellectuals working worldwide. The light of knowledge is indeed supreme it shines to the finest effect in human fellowship and is constantly fed with the oil of tolerance and charity. Government College, Ajmer has served the people for generations and this has been proved by these 30 inscriptions engraved at different places in the campus. Though there are many antique items in the college that are sufficient to build a museum which requires attention and study for both students and scholars. Each department of our college has its own history which we can't write in the present work but we hope that in future we will take up this issue for our next project. The college has been the torchbearer of learning and culture across the globe, it has produced generations of alumina of whom any college may have proud. We hope this trend will continue by the grace of God in the future also. In conclusion, we pay our tribute and thanks to all those who work for the success of the institution in the past and contributed to its present position it will always be our endeavor to carry on the great tradition of the college and make it more illustrious in the future as the center of true learning and highest culture and character.

In this college still majority of the students are first generation learners who are taking admissions from the surrounding villages, towns and districts due to the reputation of the institutions, the whole credit goes to the dedicated team of the college which includes students, teachers, employees who has proved their worth from time to time.



PRINCIPALS OF THE COLLEGE

1. Professor J.F. Golding	1868 to 1879
2. Professor F.L. Reid	1878 to 1905
3. Professor E.F. Harris	1906 to 1921
4. Professor A Miller	1921 to 1931
5. Professor P. Sheshadri	1932 to 1942
6. Professor Shiv Shankar Mathur	1942 to 1948
7. Professor V.V. John	1950 to 1956
8. Professor Bhimsen	1956 to 1962
9. Professor Sharda Prasad Kaushik	1962 to 1964
10. Professor Raghuveer Singh Kapoor	1964 to 1967
11. Dr Prahlad Narayan Mathur	1967 to 1973
12. Professor Navratan Mal Kothari	June 1973 to March 1977
13. Dr. B.V.Ratnam April	April - 1977 to June 1977
14. Professor Atal Bihari Mathur	July 1977 to December 1979
15. Professor Bijendra Narayan Roy	January 1980 to June 1980
16. Professor Narendra Prasad Wadehra	July 1980 to February 1983
17. Professor Mahesh Kumar Bhargav	March 1983 to July 1983
18. Professor Jag Mohan Shrivastav	August 1983 to November 1984
19. Professor Triloki Nath Chaturvedi	July 1985 to July 1986
20. Professor Anand Swaroop Khosaria	August 1986 to October 1987
21. Dr. Om Prakash October	October - 1987 to August 1989
22. Professor Lakshman K. Bhatiya	August 1989 to July 1990
23. Professor Prem Narayan Mathur	July 1990 to February 1992
24. Professor Rajendra Nath Mathur	February 1992 to January 1994
25. Dr. Dharmchand Mehta	February 1994 to January 1996
26. Professor Ram Avatar Vaishya	Vaishya February 1996 to December 1996
27. Professor. S.R. Chauhan	January 1997 to August 1999
28. Professor R.S. Meena	January 2000 to 2005
29. Dr. C.B. Gena	16th July 2005 to 8 August 2006
30. Dr. Nihal Chand Parekh	14th November 2006 to August 2007
31. Professor Sher Singh Dochania	August 2007 to August 2010
32. Dr. Praveen Bahel	October 2010 to August 2011
33. Professor. Elver R.J. Aubert	September 2011 to 9th January 2014
34. Dr. Madhur Mohan Ranga	9th January 2014 to 20th August 2014
35. Dr. Deepak Raj Mehrotra	16th October 2014 to 6 September 2016
36. Dr. Surendra Kumar Dev	15th September 2016 to 31st July 2018
37. Dr. (Mrs.) Sneh Saxena	1st August 2018 to 10th 2019
38. Dr. Munna Lal Agarwal	10th Jan. 2019 to 30th November 2020
39. Dr. Deepak Mehra	02nd January 2021 to 04th February 2021
40. Dr. Pratibha Yadav	04th February 2021 to 31st July, 2021
41. Dr. Deepak Mehra	09th September 2021 to 31st October 2021
42. Dr. Sudhir Kumar Upadhyay	10th February to 31st July 2022

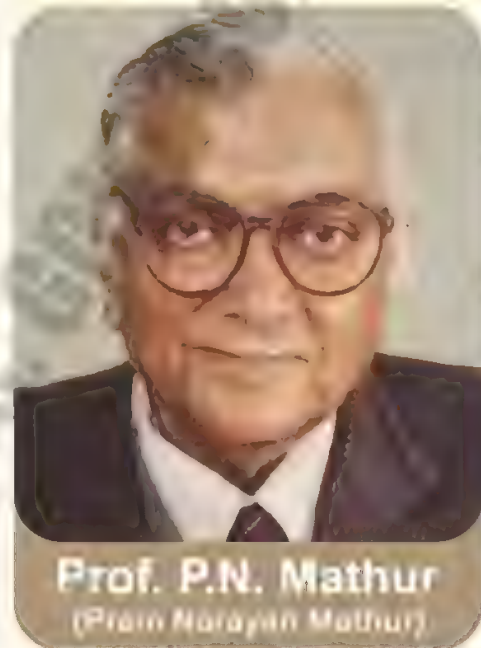
PRINCIPAL FROM HISTORY DEPARTMENT

इतिहास विषय में रुचि रखने वालों के लिए यह भी हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय के इतिहास विभाग के स्नातकोत्तर के प्रथम विभागाध्यक्ष वर्ष 1948 ई. में प्रो. रघुवीर सिंह कपूर थे। बाद में प्रो. कपूर वर्ष 1964-67 तक इसी महाविद्यालय के प्राचार्य भी हुए। प्रो. रघुवीर सिंह कपूर के बाद वर्ष 1990-92 तक प्रो. प्रेम नारायण माथुर प्राचार्य हुए। फिर हमारे इतिहास विभाग से हाल ही में वर्ष 2021 में डॉ. प्रतिभा यादव भी महाविद्यालय की प्राचार्या हुईं।

1964 - 1967



July 1990 - Feb.1992



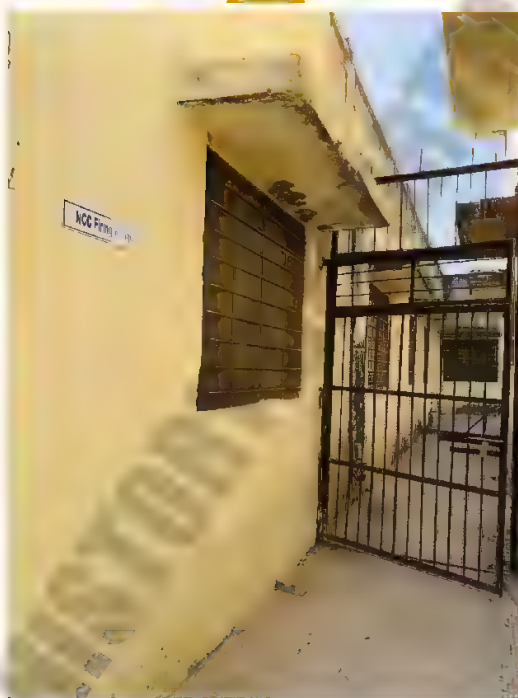
**04th February 2021 to
31st July, 2021**





FIRING RANGE

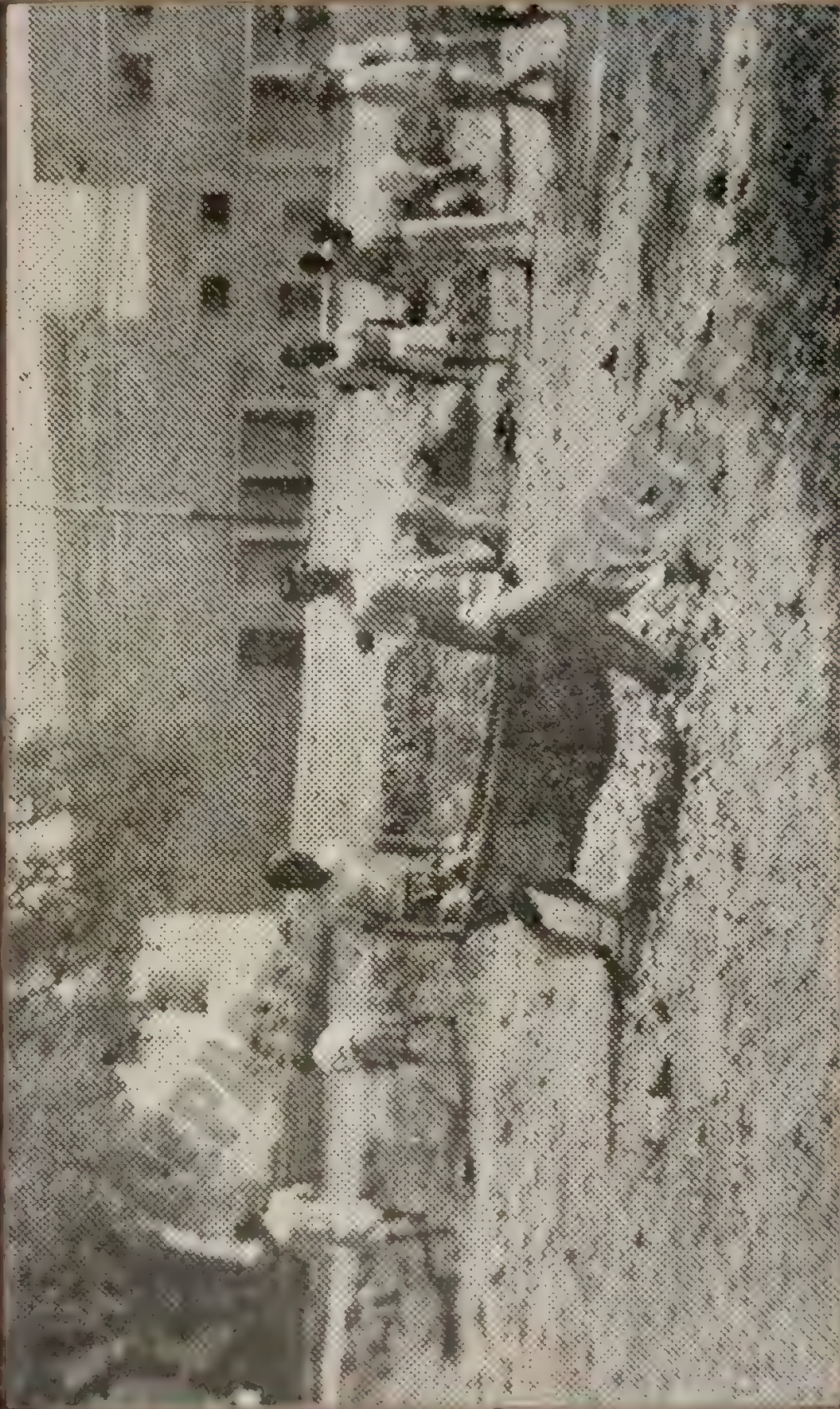
ENTRANCE GATE



NCC CADETS FIRING DRILL



Appendix



Digitized by eGangotri (Available in College Library)

You see Principal Bhim Sen working hard along with students, levelling the area.

आप देख सकते हैं कि प्रधानाचार्य भीम सेन छात्रों के साथ कड़ी मेहनत कर क्षेत्र को समतल कर रहे हैं।



Social Week - Mock Trial



Old Swimming Pool

Photo Source: College Magazine (Available in College Library)



**The Hindi Sahitya Sabha Cabinet
(Session: 1936-37)**



Hostel Association Cabinet



GREAT RAJPUT KING PRITHVIRAJ CHAUHAN



The Alwar Museum



PRIMARY SOURCES

- ORDER - 1836
- ORDER - 2014
- ENTRANCE GATE -1
- HERITAGE BUILDING
- WELL
- INSCRIPTION - WATER FOUNTAIN
- CHEMISTRY LABORATORY
- STATUE - P. SHESHADRI
- CENTENARY PAVILION
- LIBRARY
- MAIN AUDITORIUM (MAHRANA PRATAP)
- GIRLS HOSTEL
- GYMNASIUM
- STATUE - SIR C.V. RAMAN
- STATUE MAHRANA PRATAP
- MAIN STADIUM
- MATERIAL CHEMISTRY RESEARCH LAB
- ENTRANCE GATE - 2
- ENTRANCE GATE - 2
- COMMERCE BLOCK
- ADMINISTRATION BUILDING (N.C.C. BLOCK)
- U.G.C. BLOCK
- MATHS DEPARTMENT
- GYMNASIUM BUILDING
- GYMNASIUM BUILDING
- MAHATMA GANDHI AUDITORIUM
- GEOGRAPHY DEPARTMENT
- ARTS BLOCK
- RARE PICTURE OF PRITHVIRAJ CHAUHAN



SECONDARY SOURCES

- Selection from educational records (1781 – 1839), Part – I by H. Sharp, C.S.I., C.I.E. *published by Superintendent Government Printing, Calcutta 1920*
- Selection from educational records (1840 – 1859), Part – II by J.A. Richey, C.S.I. *published by Superintendent Government Printing, Calcutta 1922*
- Ajmer: Historical and Descriptive by Har Bilas Sarda, published by Scottish Mission Industries Company Limited, Ajmer (1941)
- The Government College Magazine published by Government College Ajmer (1936-37)



**THE HISTORY
OF GOVERNMENT COLLEGE, AIMER
THROUGH
INSCRIPTIONS
1836-2023**

राजकीय महाविद्यालय, अजमेर का
अभिलेखों द्वारा इतिहास

इतिहास विभाग

Dr. Dhiraj Puri Goswami
HOD

Dr. Dinesh Bhargava

Dr. Manak Jain

Dr. Lata Agarwal

Dr. Beena Kaushik

Dr. Jitendra Kumar Marothia

Mr. Poras Kumar Mahawar

Dr. S.K. S.

Dr. Seema

5003

Chair Left to Right :

ATHAR AHMED (Writer), **Prof. DHEERAJ PURI GOSWAMI** (Head of the Department and Supervisor of the Research Team), **RAGHURAJ SINGH** (Co-Writer).

Standing Left to Right (Co-Writers) :

KHUSHI NARAWAT, KULDEEP, BHEEM KUNDNANI, HARSHIT JAIN, SAURABH MEENA, VISHESHTA YADAV.



About The Writers

Writer & Co-Writers are the students of M.A. History, B.A. Pass Course and Honors who has already written **Seven Historical Tour Magazines** of History Department. Named "**Dharti Dhorari**", "**Hmari Virasat**", "**Laghu-Kathayen Mayad**" and "**Yaden**".

The Writer **Athar Ahmed** as written book on Dargah of Hazrat Khwaja Moienuddin Chishti named "**An Introduction: Ajmer Dargah**".

These Books are also published by The Department of History under the Research Guidance of the Head of the Department **Prof. Dheeraj Puri Goswami**.